

हिंदी वल्लरी

तृतीय भाषा हिंदी
Third Language Hindi

Part - 2



नौवीं कक्षा

Ninth Standard

Karnataka Text Book Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru- 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.सं.	पाठ	लेखक	पृ. सं
10.	चलना हमारा काम है (कविता)	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1-5
11.	खेलो-कूदो-स्वस्थ रहो (निबंध)	संकलित	6-13
12.	सड़क की रक्षा-सबकी सुरक्षा (कहानी)	संकलित	14-24
13.	साथी, हाथ बढ़ाना (कविता)	साहिर लुधियानवी	25-31
14.	सौर ऊर्जा (लेख)	संकलित	32-41
15.	वीरांगना चेन्नम्मा (व्यक्ति परिचय)	संकलित	42-51
16.	पूर्वाक्षर का पूर्वाग्रह (व्यंग्य रचना)	पी.एस. रामानुजम	52-61
17.	रहीम के दोहे (मध्यकालीन कविता)	रहीम	62-67
	परिशिष्ट - 1		68
18.	पत्र लेखन		71-72
19.	पूरक वाचन		73-75
20.	चरित्र-बल	निबंध	76-78

10. चलना हमारा काम है



शिवमंगल सिंह 'सुमन' -

आशय :

बच्चे इस कविता के द्वारा यह सीखते हैं कि जीवन के सफर में अनेक रुकावटें आती हैं और उनका सामना करते हुए लक्ष्य-प्राप्ति तक कदम बढ़ानेवाला व्यक्ति आदरणीय होता है।



गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यों रहूँ दर दर खड़ा
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा
जब तक न मंजिल पा सकूँ,
तब तक मुझे न विराम है,
चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
पर हो निराशा क्यों मुझे?
जीवन इसी का नाम है,
चलना हमारा काम है।

कुछ साथ में चलते रहे
कुछ बीच ही से फिर गए,
पर गति न जीवन की रुकी
जो गिर गए सो गिर गए
जो रहे हर दम,
उसी की सफलता अभिराम है,
चलना हमारा काम है।

कवि परिचय

शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी का जन्म 5 अगस्त सन् 1915 को उत्तर प्रदेश राज्य के उन्नाव जिले के झगरपुर गाँव में हुआ। बनारस हिंदू विश्व विद्यालय से इन्होंने स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। भागलपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने डी. लिट् की उपाधि भी प्राप्त की। इसी वर्ष उनको 'पद्मश्री' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। 'सुमन' जी 'पद्मभूषण', देव पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, शिखर सम्मान, भारत-भारती आदि पुरस्कारों से सुशोभित हैं। ऐसे श्रेष्ठ साहित्यकार का निधन 27 नवंबर 2002 में हृदयगति रुक जाने के कारण हुआ।

प्रमुख रचनाएँ - युग का मोल, प्रलय सृजन, विद्या-हिमालय, वाणी की व्यथा, उद्यम और विकास (गीति काव्य) प्रकृति-पुरुष, कालीदास (नाटक) आदि हैं। 1974 में इनकी कृति 'मिट्टी की बारात' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला।

शब्दार्थ :

गति-चाल, गमन, सामर्थ्य; पैर-पाँव, दर-द्वार, रास्ता-मार्ग, मंज़िल - लक्ष्य, विराम-विश्रान्ति, आराम; खोज - शोध, ढूँढ़; पग-कदम, रोड़ा-ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला, बाधाएँ; अटकता रहना - रोकना, उलझाना; अभिराम - सुन्दर, मनोहर।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. पैरों में कैसी गति भरी है?
2. कवि के अनुसार कब तक विराम नहीं है?
3. हमारा काम क्या है?
4. कवि किसकी खोज में भटक रहे हैं?
5. प्रत्येक पग पर क्या अटकता रहा है?

6. किसकी गति रुकी नहीं है?
7. 'चलना हमारा काम है' के कवि कौन हैं?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. 'आज मेरे सामने है रास्ता इतना पड़ा' पंक्ति का आशय क्या है?
2. कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि ने क्या संदेश दिया है?

III. तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए:

1. खड़ा _____
2. विराम _____
3. काम _____
4. अभिराम _____

IV. निम्नलिखित पंक्तियों को सही शब्दों से भरिए:

1. फिर क्यों रहूँ _____ खड़ा
2. तब तक _____ है
3. कुछ _____ से फिर गए
4. जो गिर गए _____ गए

V. उचित विलोम शब्दों को छाँटकर लिखिए:

1. विराम x _____
2. पूर्णता x _____
3. निराशा x _____
4. सफलता x _____
5. सामने x _____
6. जन्म x _____

आराम, अपूर्णता, विनाश,
अविराम, असफलता, अलसता,
मरण, आगे, पीछे, आशा,
जवान, सम्मान

VI. विशेषण शब्दों के साथ 'ता' प्रत्यय जुड़ने से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। कविता में 'पूर्णता' 'सफलता' शब्दों में 'ता' प्रत्यय जुड़ा है, ऐसे 'ता' प्रत्यय से जुड़े 5 शब्दों की सूची बनाइए :
उदा : सुंदर + ता = सुंदरता

1		+	ता =	
2		+	ता =	
3		+	ता =	
4		+	ता =	
5		+	ता =	

VII. इस कविता की प्रथम सात पंक्तियों को कंठस्थ कीजिए ।

VIII. भावार्थ लिखिए:

मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
निराशा क्यों मुझे?
जीवन इसी का नाम है,
चलना हमारा काम है।

IX. अनुरूपता :

1. जन्म : मरण :: बहुत : _____
2. चलना : चलाना :: गिरना : _____
3. पैर : पाँव :: सड़क : _____
4. रोड़ा : संज्ञा शब्द :: भटकना : _____

कविता से आगे-

- * इस कविता का शीर्षक 'चलना हमारा काम है' के बदले और क्या हो सकता है सोचकर उचित शीर्षक का चयन करें।

अध्यापन संकेतः

- * नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। उनकी सहायता से बच्चों से एक छोटी कविता लिखवाने की कोशिश करें या स्वयं कविता लिखकर छात्रों से वाचन करवाएँ।

नाम	मान	जहान	महान	शान
प्यारा	न्यारा	कठोर	ठोकर	सारा
मति	क्षति	गति	उन्नति	प्रगति

- * जीवन मूल्यों से संबंधित 10 गुणों की सूची बच्चों से बनवाकर कक्षा में टँगवाएँ।



11. खेलो-कूदो-स्वस्थ रहो



संकलित -

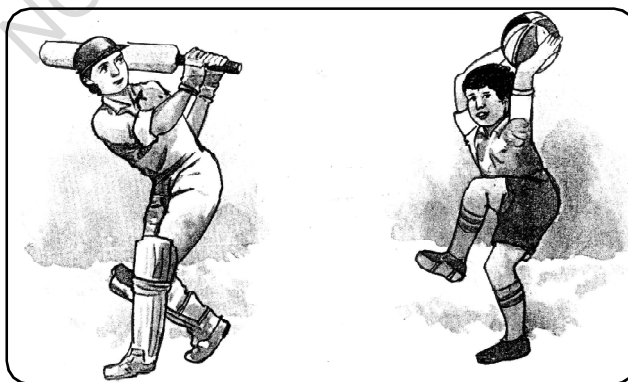
आशय :

जीवन में स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान है। सेहत को बनाए रखने के लिए कई लोग बहुत पैसे खर्च करते हैं। पैसे खर्च किये बिना ही अपने जीवन को स्वस्थ रखने के लिए “खेलो-कूदो-स्वस्थ रहो” - इस सूत्र को अपनाएँ।

खेलों की दुनिया में सदा आनंद और उल्लास का वातावरण रहता है। उत्साह का शीतल समीर बहता रहता है। खेल से तन-मन स्वस्थ होता है। मनोरंजन भी मिलता है।



खेल कई तरह के होते हैं। साधारणतया उनके दो भेद किये जाते हैं - शारीरिक खेल और मानसिक खेल। जिन खेलों में शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है, उन्हें शारीरिक खेल कहा जाता है। उदाहरण के लिए कबड्डी, हॉकी, गुल्लीडंडा, क्रिकेट, कुश्ती, फुटबाल, बैडमिंटन, तैरना, दौड़ना आदि। इसके विपरीत जिन खेलों में मानसिक श्रम अधिक होता है, उन्हें मानसिक खेल कहते हैं। उदाहरण के लिए शतरंज, केरम, पासा, बकरी-बाघ खेल आदि।



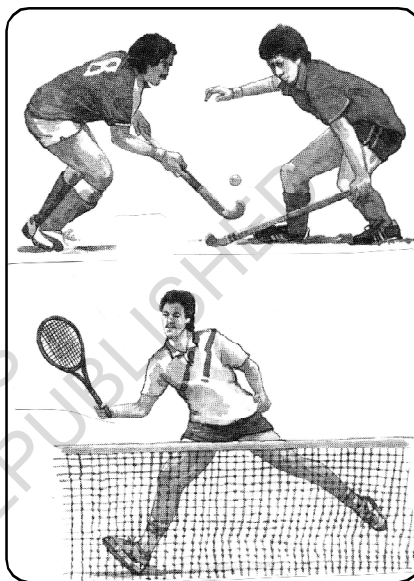
इसी प्रकार वैयक्तिक खेल और सामूहिक खेल के रूप में भी भेद किये जा सकते हैं। व्यक्तिगत खेलों में तैरना, दौड़ना, एयरोबिक्स, तीर चलाना, बिलियर्ड्स, शूटिंग, नाव चलाना, छलांग मारना आदि। सामूहिक खेलों में वॉलिबॉल, क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, बैडमिंटन आदि।

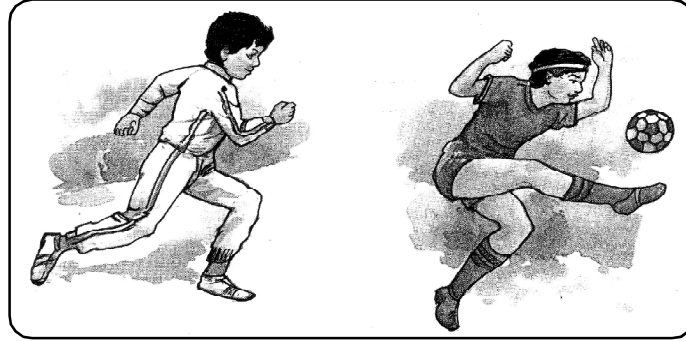
इसी प्रकार खेलों का और एक भेद भी है। कबड्डी, क्रिकेट, हॉकी, वॉलिबॉल आदि मैदानी (Outdoor) खेल हैं। शतरंज, केरम, पासा आदि घरेलू खेल (Indoor) हैं।

आजकल हमारे देश में हॉकी, क्रिकेट, बैडमिंटन, शतरंज, कुश्ती आदि खेल काफी लोकप्रिय हो रहे हैं।

राज्य और राष्ट्र के स्तर पर खिलाड़ियों को पुरस्कार दिए जाते हैं। जैसे अर्जुन, एकलव्य, द्रोणाचार्य, ध्यानचंद, राजीव खेलरत्न आदि। पुरस्कार के साथ धनराशी भी दी जाती है। अच्छे-अच्छे खिलाड़ियों को और पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों को भी राज्य सरकार, केंद्र सरकार, बैंक और कई कंपनियों में नौकरी दी जाती है। पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों को नौकरियों की भर्ती में आरक्षण की सुविधा भी रहती है। इतना ही नहीं रेल, हवाईजहाज़ आदि में सफ़र करने के लिए भी विशेष रूप से आरक्षण की सुविधा दी जाती है। कई कंपनियाँ खिलाड़ियों को अपने प्रतिनिधि बना लेती हैं।

जीवन में खेलों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। खेल छात्र जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। छात्रों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलना भी ज़रूरी है। खेलों द्वारा बच्चों में धैर्य, लगन, परिश्रम, उत्साह तथा परस्पर सहयोग आदि गुणों का विकास होता है।





जहाँ विद्यालय में छात्र शिक्षा द्वारा अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, वहीं खेलों द्वारा जीवन का अनुभव प्राप्त करते हैं।

नेहरू जी के अनुसार खेल को खेल की भावना से ही खेलना चाहिए। नेहरू जी के समान ही गांधीजी भी स्वास्थ्य के लिए व्यायाम को आवश्यक मानते थे। खेल भी व्यायाम का ही एक अंग है। खेलने से हमारे अंगों की कसरत हो जाती है और हम हृष्ट-पुष्ट बनते हैं। अतः अच्छे स्वास्थ्य के लिए खेलना ज़रूरी है।



खेलों द्वारा हम नाम के साथ-साथ धन भी कमा सकते हैं। आजकल खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए विद्यालयों में भी 'खेल-दिवस' का आयोजन किया जाता है। जीतनेवाले बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं। सभी बच्चों को खेलों में भाग लेना चाहिए ताकि वे स्वस्थ बनें। कहा जाता है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।"

अतः तन-मन दोनों को स्वस्थ बनाने के लिए खेलना अत्यन्त आवश्यक है।

शब्दार्थ :

छात्र – विद्यार्थी , ज़रूरी – आवश्यक , शीतल – ठंडा , समीर – हवा, वायु ; विकास – प्रगति, उन्नति ; तलाश – ढूँढ़, खोज; चोट – घाव, हिस्सा – भाग, स्वास्थ्य – तंदुरुस्ती, सेहत ; कसरत – व्यायाम, सहयोग – सहकार, चिंता – परेशानी, खाली – रिक्त, आरक्षण – Reservation, हृष्ट-पुष्ट – तगड़ा, हट्टा-कट्टा।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. खेलों की दुनिया कैसी है ?
2. व्यक्तिगत खेलों के उदाहरण दीजिए।
3. हम हृष्ट-पुष्ट कैसे बन सकते हैं ?

II. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. खेलों के प्रकार लिखते हुए कुछ उदाहरण दीजिए।
2. खेलों से क्या लाभ हैं ?
3. राज्य और राष्ट्र स्तर पर खिलाड़ियों को कौन-कौन-से पुरस्कार दिये जाते हैं?

III. विलोम शब्द लिखिए :

आवश्यक, ज्ञान, उन्नति, स्वस्थ

IV. समानार्थक शब्द लिखिए :

दुनिया, वीर, स्पर्धा, पुरस्कार, विद्यार्थी

V. खाली स्थान भरिए :

1. खेल से _____ स्वस्थ होता है।
2. खेल _____ जीवन का महत्वपूर्ण अंग है।
3. खेल भी _____ का ही एक अंग है।
4. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ _____ का निवास होता है।

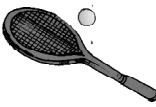
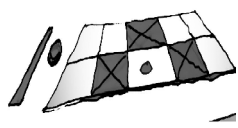
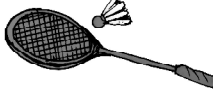
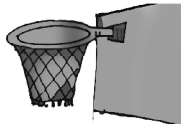
VI. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

उत्साह, पुरस्कार, मानसिक श्रम, आयोजन

VII. कन्नड़ में अनुवाद कीजिए :

1. खेल कई तरह के होते हैं।
2. जीवन में खेलों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है।

VIII. उपकरणों को देखकर खेलों का नाम लिखिए:

- | | | |
|--|--|--|
| 1)  | 2)  | 3)  |
| _____ | _____ | _____ |
| 4)  | 5)  | 6)  |
| _____ | _____ | _____ |

IX. क्या आपने सतोलिया (लगोरी) खेला है? उस खेल के नियमों को लिखिए:

X. बचपन में आपने गिल्ली-डंडा, पतंग उड़ाना, कांचे, सतोलिया, लट्टू, खो-खो और छुप्पा-छुप्पी खेला होगा। किसी एक खेल के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

XI. अनुरूपता :

1. शतरंज : मानसिक खेल :: बैडमिंटन : _____
2. क्रिकेट : मैदानी खेल :: केरम : _____
3. तेंदूल्कर : क्रिकेट :: ध्यानचंद : _____
4. तैरना : व्यक्तिगत खेल :: कबड्डी : _____

भाषा ज्ञान

‘समुच्चयबोधक अव्यय’

- * खेलने से हमारे अंगों की कसरत हो जाती है और हम हृष्ट-पुष्ट बनते हैं।
- * मैं घर जल्दी गया किंतु सो नहीं पाया।
- * खेलने से शारीरिक व मानसिक बल बढ़ता है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द समुच्चयबोधक अव्यय हैं।

दो शब्दों, उपवाक्यों और वाक्यों को जोड़ने या अलग करनेवाले शब्दों को ‘समुच्चयबोधक’ कहते हैं।

उदाहरण : कि, लेकिन, किंतु, परंतु, क्योंकि, तथा, एवं, अथवा, मगर आदि।

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं -

1. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** - दो अथवा दो से अधिक समान पदों, उपवाक्यों या वाक्यों को आपस में जोड़नेवाले शब्दों को समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। जैसे - या, व, बल्कि, इसलिए, और, तथा आदि।
 - * वरुण ने अपना गृहकार्य किया और खेलने चला गया।
 - * मदन व नंदन सो रहे हैं।
 - * मैंने कोशिश की, लेकिन काम नहीं बना।
2. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** - एक अथवा एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को आपस में जोड़नेवाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। जैसे - तथापि, यद्यपि, कि, क्योंकि, ताकि आदि।
 - * माँ ने कहा कि तुरंत तैयार हो जाओ।
 - * मैं घर चला आया क्योंकि पैसे खत्म हो गये।
 - * अभी परीक्षा की तैयारी करो ताकि अच्छे अंक पा सको।

I. निम्नलिखित उपवाक्यों को समुच्चयबोधक से जोड़िए :

(इसलिए, लेकिन, ताकि, अतः, कि, और, या)

1. तुम्हारी तबीयत खराब है। दवाई तो खानी पड़ेगी।
2. जल्दी आओ। समय पर पहुँच सको।
3. विकास ने समझाया। बात मत बढ़ाओ।
4. रामायण महाकाव्य है। महाभारत भी महाकाव्य है।
5. राम घर आया। श्याम घर आया?
6. क्या तुम कॉफी पीओगे। क्या तुम चाय पीओगे ?
7. आज इतवार है। आज सभी दुकानें बन्द हैं।
8. मैं जल्दी गया था। काम नहीं बना।

II. रिक्त स्थानों में उचित समुच्चयबोधक भरिए:

(क्योंकि, इसलिए, या, बल्कि)

1. उसे खीर नहीं, _____ हलवा खानी है।
2. इस समय बाहर मत निकलो, _____ मौसम खराब है।
3. लता तुम सोना चाहती हो, _____ खेलना चाहती हो?
4. आज मैं थोड़ी देर से उठा, _____ स्कूल समय पर नहीं पहुँच सका।

III. निम्नलिखित समुच्चयबोधकों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए:

1. लेकिन - _____
2. क्योंकि - _____
3. ताकि - _____
4. या - _____
5. बल्कि - _____

अध्यापन संकेत :

* किसी एक प्रसिद्ध खिलाड़ी का जीवन-परिचय, भेंटवार्ता, आत्म-कथन आदि संग्रह करके चित्रों द्वारा बच्चों को समझाएँ।

* छात्रों को कर्नाटक के कुछ मशहूर खिलाड़ियों की जानकारी प्राप्त करवाएँ।



12. सड़क की रक्षा - सबकी सुरक्षा

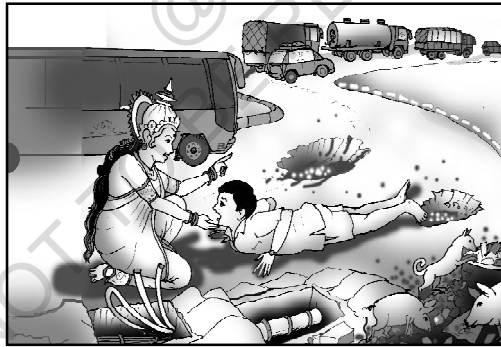
संकलित-



आशय :

अच्छे नागरिक होने के नाते हर एक को अपने कर्तव्यों का ध्यान रखना चाहिए जिससे दूसरों को हमारे कारण कोई कष्ट न उठाना पड़े। इस पाठ में सड़क की सुरक्षा, सफाई आदि पर प्रकाश डालते हुए नागरिक के प्रमुख कर्तव्य के प्रति छात्रों को सचेत किया गया है।

विभु नौवीं कक्षा में पढ़ रहा था। उसे साढ़े नौ बजे तक स्कूल पहुँचना था। उसकी साइकिल खराब हो गयी थी। इसलिए वह सड़क पर जल्दी-जल्दी दौड़ता हुआ जा रहा था। सड़क पर किसीने केले का छिलका फेंक दिया था। हमेशा सबको सफाई का ध्यान रखना चाहिए, मगर कुछ लोग ऐसा नहीं करते। कभी-कभी वे अपने नागरिक के कर्तव्य को भूल जाते हैं। विभु का पाँव छिलके पर पड़ते ही वह फिसलकर गिर पड़ा। चोट लगी, कपड़े गंदे हो गये तो वह उदास हो गया।



‘उठो बेटा, उदास मत होओ’- कहीं से आवाज़ आयी। उसने आगे-पीछे देखा। आस-पास कोई दिखाई नहीं दिया। दूर-दूर तक कोई नहीं था। विभु चौंक गया। इतने में सड़क फिर से बोली-“बेटा, मैं सड़क बोल रही हूँ। चोट तुम्हें ही नहीं, मुझे भी लगी है। मुझे तो हमेशा चोट लगती रहती है। आदमी, ताँगे, जानवर, मोटर गाड़ियाँ चौबीसों घंटे मेरे ऊपर चलते रहते हैं। लोग ढेर-सारा कूड़ा-कचरा डालते रहते हैं। वे बड़ी निर्ममता से मुझे काट भी देते हैं और महीनों-महीनों मेरे घाव नहीं भरते।” सड़क जब यह सब बोल रही थी तब रो रही थी।

विभु को जैसे साँप सूँघ गया। इधर-उधर देखा। दो-तीन जगहों में सड़क को आर-पार काटा गया था। मोड़ पर बड़े-बड़े पत्थर गिराये गये थे। 'जल पूर्ति विभाग' ने और नये-नये मकान बनानेवालों ने सड़क को काटने का काम किया था। 'सार्वजनिक कार्य विभाग' के निर्माण कार्य के कारण सड़क के एक-तिहाई भाग पर पत्थर गिरे थे, बीच-बीच में विभु ने कई गड्ढे भी देखे। उसने सोचा कि सड़क को सरकारी विभागों की सुरक्षा चाहिए। नगरपालिका से सफाई एवं देखरेख भी चाहिए।

विभु सड़क की व्यथा को अनुभव कर दुखी हो गया। उसको लगा कि सड़क कितना सहती है, फिर भी सबको जोड़ने की उदारता दिखाती है। कहीं कच्ची है, कहीं डामरवाली है तो कहीं कांक्रीट की बनी हुई है। सड़क को कभी अपने रूप की चिंता नहीं बल्कि लोगों की सुविधा की चिंता है। मगर लोगों को सड़क की ज़रा-सी भी परवाह नहीं।

विभु ने सड़क को सांत्वना देते हुए कहा - “मत रो माँ! तुम्हारी खुशी के लिए हम क्या कर सकते हैं? कोई उपाय बताओ।” सड़क वात्सल्य भाव से बोली- “बेटा, मैं चाहती हूँ कि लोगों में सड़क की सुरक्षा का भाव हो। मेरी सूरत न बिगाड़ें। सफाई का ध्यान रखें तथा यातायात के नियमों का पालन करें।”

विभु को लगा कि लोगों के अत्याचार से सड़क को मुक्ति दिलानी चाहिए। सड़क की सुरक्षा, सफाई एवं देखभाल के प्रति लोगों में जागृति लानी चाहिए। सड़क के साथ अन्याय करनेवालों पर कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि वे अपने नागरिक कर्तव्य के प्रति सचेत रहे। लोगों को यह सोचने के लिए मजबूर करना चाहिए कि सड़क की सुरक्षा में सरकारी विभागों के साथ उनका भी सहयोग रहे। इसके साथ-साथ सड़क को तोड़ने, काटने तथा गंदा करनेवालों को एहसास दिलाना चाहिए कि उनके कारण सड़क को कितना कष्ट होता है।

विभु ने तय किया कि वह अपने साथियों से चर्चा करके, अपने अध्यापक के मार्गदर्शन में इस दिशा में कुछ प्रयास अवश्य करेगा। इस प्रकार सोचते-सोचते वह स्कूल की ओर चल पड़ा, भले ही चलने में उसे थोड़ी-सी देर हो गयी थी।

शब्दार्थ :

चोट-घाव, पीड़ा; उदास-खिन्न, दुखी; चौकना - चकित होना, कूड़ा-कचरा, रद्दी; गड़ढा - गहरी ज़मीन, गर्त, ढ़डु; देखरेख-परवाह, रख रखाव; कच्ची - अपरिपक्व, अपूर्ण, कमज़ोर; डामर - तारकोल, Tar; कंक्रीट - Concrete, रेत+चूना+कंकड़ का मिश्रण, (कंकड़ पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े); सुविधा-आराम, परवाह-चिंता, फिक्र, प्रेम; सांत्वना-तसल्ली, आश्वासन; सूरत - मुख, रूप; देखभाल-देखरेख, कार्रवाई-कार्य, विधि सम्मत कार्य; सचेत-जागृत, सजग; मजबूर-विवश, असहाय; एहसास-अनुभूति, महसूस; तय करना-निश्चय करना, निर्णय करना; प्रयास - प्रयत्न, कोशिश; सूरत बिगाड़ना - कुरूप बनाना।

मुहावरे :

1. घाव भरना - गड़ढों को भरना, शरीर पर हुआ घाव ठीक होना
2. साँप सूँघ जाना - निष्क्रिय हो जाना, बेदम हो जाना

विशेष सूचना :

1. जल पूर्ति विभाग - Water Supply Department
2. सार्वजनिक कार्य विभाग - PWD - Public Works Department

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. विभु कौन-सी कक्षा में पढ़ रहा था?
2. सड़क पर किसीने क्या फेंक दिया था?
3. सड़क के बीच-बीच में विभु ने क्या देखा?
4. सड़क को किसकी चिंता नहीं है?
5. सड़क के साथ अन्याय करनेवालों पर क्या होनी चाहिए?
6. विभु ने किसके मार्गदर्शन में प्रयास करने की बात सोची?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. विभु क्यों दौड़ता हुआ स्कूल जा रहा था?
2. विभु क्यों चौंक गया?
3. लोग सड़क के प्रति अपनी निर्ममता कैसे प्रकट करते हैं?
4. सड़क को काटने का काम किसने किया था?
5. विभु ने सड़क को सांत्वना देते हुए क्या कहा?
6. विभु ने अंत में क्या तय किया?

III. रिक्त स्थान भरिए :

1. विभु को _____ बजे तक स्कूल पहुँचना था।
2. वह _____ पर दौड़ता हुआ जा रहा था।
3. सड़क को तो हमेशा _____ लगती रहती है।
4. लोग महीनों-महीनों सड़क के _____ नहीं भरते।
5. लोगों में सड़क की _____ का भाव हो।
6. लोग _____ का ध्यान रखें।

IV. अन्य वचन रूप लिखिए:

उदा: 1. केला-केले	1. लोग-लोग	1. आवाज़-आवाज़ें
2. छिलका-	2. पाँव-	2. सड़क -
3. ताँगा-	3. जानवर-	3. चोट -
4. महीना -	4. घाव -	4. सूरत -
5. घंटा -	5. उपाय -	5. जगह -

V. यातायात-साधनों के नाम लिखिए:

सड़क पर चलनेवाले	पटरी पर	पानी पर	आसमान में
_____	_____	_____	_____
_____		_____	_____
_____		_____	_____

VI. दो-दो पर्यायवाची शब्द ढूँढ़कर लिखिए:

(रास्ता, शुद्ध, मानव, नीर, संतोष, चेहरा, दोस्त, विद्यालय, मित्र, मुख, पाठशाला, आनंद, जल, मनुष्य, स्वच्छ, राह)

जैसे : सड़क - रास्ता , राह

1. साफ - _____, _____
2. खुशी - _____, _____
3. स्कूल - _____, _____
4. साथी - _____, _____
5. सूरत - _____, _____
6. आदमी - _____, _____
7. पानी - _____, _____

VII. किन-किन फलों को छिलके के साथ खा सकते हैं? किनको नहीं? एक सूची बनाइए :

	छिलके के साथ	छिलका निकालकर
जैसे :	1. सेब	1. केला
	2.	2.
	3.	3.
	4.	4.
	5.	5.

निर्देश : छिलका निकालने के बाद छिलके को कूड़ेदानी में ही डाले।

VIII. सार्थक वाक्य बनाइए:

1. पहुँचना था उसे तक बजे साढ़े नौ स्कूल।
2. जाते नागरिक कर्तव्य हैं अपने भूल वे।
3. बड़े-बड़े गिराये पत्थर पर गये मोड़ थे।
4. परवाह मगर की सड़क ज़रा-सी भी नहीं को लोगों।
5. बोली भाव सड़क वात्सल्य से।

IX. पाठ में से द्वित्व शब्दों को चुनकर लिखिए:

जैसे: 1. जल्दी - जल्दी

2. कभी - कभी

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

8. _____

X. वर्ग पहेली से यातायात के साधनों के नाम चुनकर लिखिए:

ब	रे	ल	गा	ड़ी	रा
स	वि	स्कू	ट	र	के
ट्र	मा	ज	हा	ज	ट
क	न	काँ	र	आँ	टो

1. _____ 6. _____

2. _____ 7. _____

3. _____ 8. _____

4. _____ 9. _____

5. _____

XI. सड़क ने अपने बारे में विभु को बताया। अब आप अपने बारे में लिखिए:

1. आपका नाम क्या है? _____

2. आपकी उम्र कितनी है? _____

3. कौन-सी कक्षा में पढ़ते हैं? _____

4. स्कूल का नाम क्या है? _____

5. आपको स्कूल कितने बजे पहुँचना है? _____

6. आपके कितने मित्र हैं? _____

7. क्या वे कभी आपकी सहायता करते हैं? _____

8. अपने किसी एक मित्र का नाम लिखिए। _____

XII. अंकों को हिंदी शब्दों में लिखिए:

उदा : $\frac{1}{3}$ - एक तिहाई

1. $\frac{1}{4}$ -

2. $\frac{1}{2}$ -

3. $\frac{3}{4}$ -

4. $1\frac{1}{2}$ -

5. $1\frac{3}{4}$ -

6. $2\frac{1}{2}$ -

XIII. अनुरूपता :

1. साइकिल : दो पहिया :: कॉर : _____
2. कभी-कभी : द्विरुक्ति :: आर-पार : _____
3. रेलगाड़ी : पटरी :: साइकिल : _____
4. निर्ममता : रेफ शब्द :: प्रकार : _____

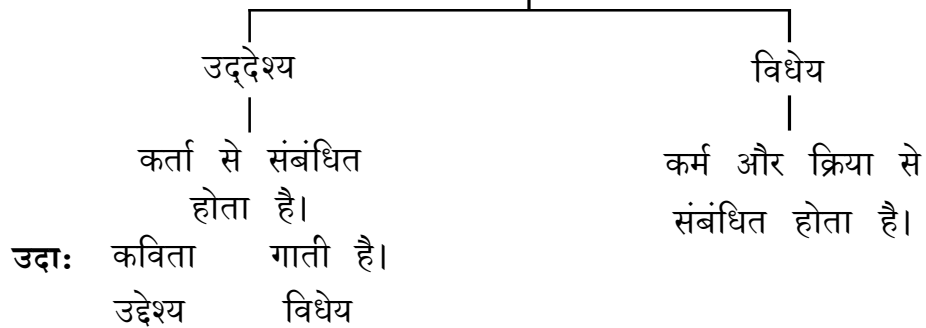
भाषा ज्ञान

वाक्य तथा वाक्य के प्रकार

पूर्ण भाव प्रकट करनेवाला शब्द समूह 'वाक्य' कहलाता है। प्रत्येक वाक्य में कम से कम दो शब्दों का होना अनिवार्य है। जैसे -

1. सूरज निकला।
2. वह आया।

वाक्य के दो अंग



वाक्य के प्रकार

संरचना के अनुसार

1. साधारण वाक्य/सरल वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

अर्थ के अनुसार

1. विधानार्थक वाक्य
2. प्रश्नार्थक वाक्य
3. निषेधार्थक वाक्य
4. आज्ञार्थक वाक्य
5. इच्छार्थक वाक्य
6. संदेहार्थक वाक्य
7. संकेतार्थक वाक्य
8. विस्मयादिबोधक वाक्य

I. संरचना के अनुसार :

1. **साधारण वाक्य / सरल वाक्य** : जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है उसे सरल वाक्य कहते हैं। यह एक ही क्रिया के साथ बननेवाला स्वतंत्र वाक्य होता है।

उदा : सलमान स्कूल जाता है।

2. **मिश्र वाक्य** : जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य होते हैं।

उदा : सड़क ने कहा कि लोगों में सड़क की सुरक्षा का भाव हो।
सड़क ने कहा - प्रधान वाक्य है। लोगों में सड़क की सुरक्षा का भाव हो - आश्रित वाक्य है।

विशेष सूचना : आश्रित वाक्य से पूर्व कि, जो, क्योंकि, जब, यद्यपि आदि संयोजक आते हैं।

3. **संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य अथवा मिश्रवाक्य होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदा : लोग बड़ी निर्ममता से मुझे काट देते हैं और वे महीनों - महीनों मेरे घाव नहीं भरते।

लोग बड़ी निर्ममता से मुझे काट देते हैं। - साधारण वाक्य (1)

वे महीनों-महीनों मेरे घाव नहीं भरते। - साधारण वाक्य (2)

विशेष सूचना : और, तथा, बल्कि, अथवा, नहीं तो, इसलिए आदि संयोजकों का प्रयोग सामान्यतः संयुक्त वाक्यों में होता है।

II. अर्थ के अनुसार :

1. **विधानार्थक वाक्य (कोई भी कथन):**

उदा : 1. विभु को साढ़े नौ बजे तक स्कूल पहुँचना था।

2. आंदोलन में नारियाँ भी पीछे नहीं रहीं।

2. **प्रश्नार्थक वाक्य :**

उदा : तुम्हारी खुशी के लिए हम क्या कर सकते हैं?

3. **निषेधार्थक वाक्य :**

उदा : 1. मत रो माँ। 2. मुझसे यह काम नहीं हो सकता।

4. **आज्ञार्थक वाक्य :**

उदा : 1. जाओ, पानी ले आओ। 2. यह काम पूरा करो।

5. इच्छार्थक वाक्य :

- उदा : 1. समाज में भाई-चारे की भावना होनी चाहिए।
2. मुझे सौ रुपये चाहिए।

6. संदेहार्थक वाक्य :

- उदा : 1. कल शायद छुट्टी होगी।
2. हो सकता है पानी बरसे।

7. संकेतार्थक वाक्य :

- उदा : 1. यदि परिश्रम करोगे तो फल पाओगे।
2. यदि बिजली कटेगी तो पढ़ना मुश्किल है।

8. विस्मयादिबोधक वाक्य :

- उदा : 1. अच्छा ! तुम जल्दी आ गये!
2. वाह! कितना सुंदर फूल है!

I. सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्यों को पहचानिए :

1. विभु नौवीं कक्षा में पढ़ रहा था।
2. नगरपालिका से सफाई एवं देखरेख भी चाहिए।
3. सड़क को कभी अपने रूप की चिंता नहीं बल्कि लोगों की सुविधा की चिंता है।
4. सड़क जब यह सब बोल रही थी तब रो रही थी।
5. विभु ने सड़क के बीच-बीच में कई गड्ढे भी देखे।
6. विभु दुखी हो गया।
7. विभु ने सोचा और सड़क को सांत्वना दी।

अध्यापन संकेत :

सड़क की सुरक्षा हर नागरिक का कर्तव्य है। इसी प्रकार के अन्य नागरिक-कर्तव्यों की एक सूची छात्रों से बनवाएँ और उनमें जागृति पैदा करें।



13. साथी, हाथ बढ़ाना

साहिर लुधियानवी -



आशय :

एक दूसरे के साथ मिलकर रहने से मुश्किल काम भी आसान हो जाता है। नये-नये मार्ग खुलने लगते हैं। इस कविता में मिलजुलकर रहने से प्राप्त होनेवाले परिणामों के बारे में बताया गया है।



साथी, हाथ बढ़ाना।

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।

साथी, हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया,
सागर ने रास्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया,
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें,
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें,
साथी, हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना,
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना,
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक,
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रास्ता नेक,
साथी, हाथ बढ़ाना।

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया,
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा,
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत,
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत,
साथी, हाथ बढ़ाना।



कवि परिचय

साहिर लुधियानवी का असली नाम अब्दुल हथी साहिर है। उनका जन्म 8 मार्च 1921 में लुधियाना (भारत) के एक जागीरदार घराने में हुआ था। वे बहुत बड़े कवि तथा गीतकार थे। बंबई (वर्तमान मुंबई) में वे एक उर्दू पत्रिका के संपादक रहे। उन्होंने कई फिल्मों के लिए गीत लिखे। 59 वर्ष की आयु में 25 अक्टूबर 1980 को दिल का दौरा पड़ने से उनका देहांत हो गया। 1964 और 1977 में उन्हें दो बार फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ गीतकार पुरस्कार मिला था।

शब्दार्थ:

बोझ-भार, कदम बढ़ाना- आगे-आगे चलना, फौलादी-लोहा, मजबूत; सीना-छाती, अपना लेख-खुद लिखे हुए अक्षर, लिखावट ; गैर-पराया, खातिर - के लिए, कारण, मंज़िल-लक्ष्य, गंतव्य, मुकाम, नेक-अच्छा, उत्तम; कतरा - किसी तरल पदार्थ की बूँद, दरिया - नदी, ज़र्रा - गजरा, फूलों की छोटी माला; सेहरा - फूलों से बनी माला जो दूल्हे के सिर पर बाँधी जाती है, राई- एक प्रकार की छोटी सरसों, इंसाँ-इन्सान, आदमी।

मुहावरे :

1. हाथ बढ़ाना - सहयोग देना, मदद करना
2. बोझ उठाना - जिम्मेदारी लेना
3. सीस झुकाना - विनम्र होना, नतमस्तक होना
4. राहें पैदा करना - नये मार्ग ढूँढ़ना
5. राई मिलकर परबत बनना - छोटी-छोटी बातों से बड़ा परिणाम निकलना (राई का पहाड़ बनना)

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवि किससे हाथ बढ़ाने के लिए कह रहे हैं?
2. बोझ कैसे उठाना चाहिए?
3. सागर ने रास्ता कब छोड़ा?
4. हम अगर चाहें तो कहाँ राहें पैदा कर सकते हैं?
5. अपनी मंज़िल कैसी मंज़िल है?
6. राई एक से एक मिले तो क्या बन सकती है?
7. किस्मत को कैसे अपने बस में कर सकते हैं?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. मेहनत करनेवाले मिलकर कदम बढ़ाते हैं तो क्या-क्या हो सकता है?
2. एक से एक मिलने का परिणाम क्या होगा? (किन्हीं दो)

III. इन पंक्तियों को पूरा कीजिए:

1. एक _____ थक जाएगा, मिलकर _____ उठाना।
2. साथी, हाथ _____।
3. मेहनत अपने _____ की रेखा, _____ से क्या डरना।
4. अपनी _____ सच की मंज़िल, अपना _____ नेक।
5. एक से एक मिले तो _____, बस में कर ले _____।

IV. तुकवाले शब्दों को चुनकर लिखिए:

जैसे : बढ़ाया - झुकाया

1. बाँहें - _____
2. डरना - _____
3. एक - _____
4. परबत - _____

V. भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए :

एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत,
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत,
साथी, हाथ बढ़ाना।

VI. अपने साथी के बारे में थोड़ी-सी जानकारी दीजिए:

1. आपके कितने साथी हैं? _____
2. अपने पाँच साथियों के नाम लिखिए। _____
3. आपका बहुत अच्छा, गहरा दोस्त कौन है? _____
4. कितने सालों की दोस्ती है? _____
5. दोनों के बीच कभी झगड़ा हुआ है? _____
6. किस बात पर झगड़ा हुआ?
7. कैसे सुलझाया? _____

VII. इस कविता में अपने साथी से हाथ बढ़ाने के लिए कहा गया है। मिलकर बोझ उठाने की बात बतायी गयी है। यह बात परिवार में भी आवश्यक है या नहीं?

अब लिखिए -

1. आपके परिवार में कौन-कौन रहते हैं?
2. घर में कुल कितने लोग हैं?
3. उनके नाम क्या हैं?
4. उनकी आयु कितनी है?
5. वे क्या काम करते हैं?

उदा:

नाम	आयु	काम
1. पापा/पिताजी-सुरेश	42	डॉक्टर
2. माँ _____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

VIII. परिवार के और भी कई सदस्य होते हैं। जैसे दादा, दादी आदि। पिता के पिता (पिताजी) को दादा कहा जाता है।

अब लिखिए रिश्तों का नाम :

(बुआ, नाना, दादी, ताऊ, नानी, मामा, चाचा, मौसी)

1. पिताजी की माँ _____
2. पिताजी के बड़े भाई _____
3. पिताजी की बहन _____
4. पिताजी के छोटे भाई _____

5. माँ के पिताजी _____
6. माँ की माँ _____
7. माँ के भाई _____
8. माँ की बहन _____

IX. तुम्हारे विचार से किसकी क्या-क्या जिम्मेदारियाँ हैं?

1. पिताजी की _____
2. माताजी की _____
3. दादाजी की _____
4. दोस्त की _____
5. तुम्हारी _____

X. सही मिलान कीजिए :

1. हाथ बढ़ाना - नये मार्ग ढूँढ़ना
2. बोझ उठाना - आगे निकलना
3. कदम बढ़ाना - सहयोग देना/मदद करना
4. राहें पैदा करना - छोटी-छोटी बातों से बड़ा परिणाम निकलना
5. राई का पहाड़/ - जिम्मेदारी लेना
परबत बनना

XI. अनुरूपता:

1. बढ़ना : बढ़ाना :: उठना : _____
2. परबत : पहाड़ :: किस्मत : _____
3. एक एक कतरा : दरिया :: एक एक राई : _____
4. अपना : पराया :: डर : _____

भाषा ज्ञान

मुहावरा

पिछली कक्षा में आप 'मुहावरे' का मतलब समझ गये हैं। साधारण अर्थ के बदले विशेष अर्थ प्रकट करनेवाले वाक्यांश 'मुहावरे' कहलाते हैं। मुहावरे स्वतंत्र वाक्यांश नहीं होते। इनके प्रयोग से भाषा सरस एवं सशक्त हो जाती है। भावाभिव्यक्ति में चमत्कार आ जाता है। कुछ मुहावरे

1. नौ दो ग्यारह होना - गायब होना
2. मुँह से फूल झड़ना - मीठा / प्रिय वचन बोलना
3. हवा से बातें करना - बहुत तेज दौड़ना
4. मिट्टी में मिल जाना - नष्ट हो जाना
5. उन्नीस बीस का अंतर होना - बहुत कम अंतर होना

अध्यापन संकेत :

- * इस कविता को छात्रों से सामूहिक रूप में गँवाएँ।
- * मुहावरों का अर्थ सहित चार्ट बनवाकर कक्षा में टँगवाएँ।



14. सौर ऊर्जा



संकलित-

आशय :

आज के युग में नवीकरणीय योग्य ऊर्जा की अत्यधिक आवश्यकता है। सौर ऊर्जा भी नवीकरणीय योग्य ऊर्जा है। इस पाठ के द्वारा ऊर्जा की महत्ता के बारे में जानकारी प्राप्त किया जा सकता है।

हजारों सालों से हम सूर्य की ऊर्जा का उपयोग करते आ रहे हैं; लेकिन हाँ! बिजली बनाने के लिए उसका उपयोग हाल ही में शुरू हुआ है। सूर्य पृथ्वी से है लगभग 15 करोड़ कि.मी. की दूरी पर, किन्तु बाप रे! है कितना शक्तिशाली। उसकी ऊर्जा के एक हिस्से मात्र से हमारी ऊर्जा संबंधी सारी आवश्यकताएँ पूर्ण हो सकती हैं।



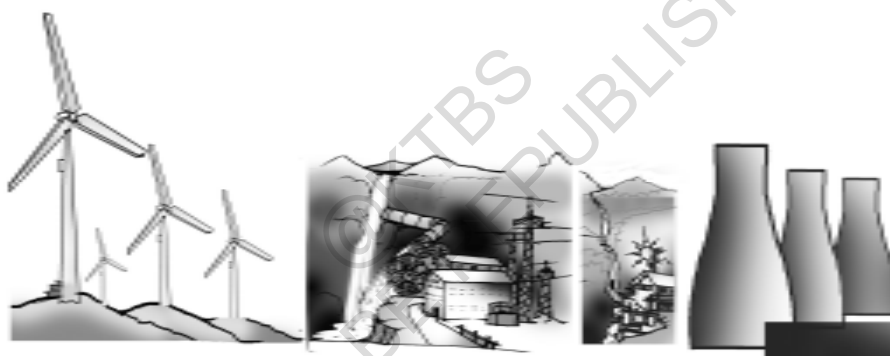
सौर ऊर्जा का अर्थ है 'सूर्य-शक्ति'। इसे अंग्रेज़ी में 'Solar Energy' कहते हैं। क्या खूब! आजकल इसी ऊर्जा का उपयोग बिजली के उत्पादन में होता है। सूर्य से हमें ताप भी मिलता है, प्रकाश भी। जैसे-जैसे बिजली का उपयोग तथा माँग बढ़ने लगी, वैसे-वैसे बिजली उत्पादन के अलग-अलग स्रोतों को मनुष्य ढूँढ़ने लगा। तब प्रारंभ हुआ सूर्य से नवीकरणीय योग्य ऊर्जा का उत्पादन।

नवीकरणीय योग्य ऊर्जा का उत्पादन मुख्यतः जल, वायु तथा सूर्य इन तीन तत्वों से हो सकता है। इसे जल ऊर्जा, वायु ऊर्जा और सौर ऊर्जा कहा जाता है।

वाह! क्या बात है। पिछले कुछ वर्षों से 'सौर ऊर्जा' उत्पादन की तकनीक में तेजी से वृद्धि हुई है। सौर ऊर्जा से बिजली पैदा करने के प्रमुख रूप से दो तकनीकें उपलब्ध हैं। एक है 'फोटोवोल्टाइक' और दूसरा है 'कॉन्सेंट्रेटिंग'।

जी हाँ! इन दोनों तकनीकों में सौर ऊर्जा को सीधे बिजली में बदला जा सकता है।

सौर ऊर्जा का उपयोग कहाँ-कहाँ होता है, आइए देखें।



1. सौर ऊर्जा : यह विद्युत ऊर्जा के बदले में उपयुक्त होती है। यह ऊर्जा सीधे सूर्य से प्राप्त होती है। क्या खूब! इससे घरों में बिजली मिलती है। पानी भी गरमाया जा सकता है।
2. सोलार कुकर : खाना पकाने के लिए ईंधन के बदले सौर ऊर्जा का (सौर चूल्हा पाचक) उपयोग होता है। जी हाँ! सोलार कुकर को बाहर रखकर खाना पकाया जा सकता है।
3. सौर लालटेन : यह हल्का होता है। अरे! इसे जलाने के लिए मिट्टी का तेल, पेट्रोल या गैस की जरूरत ही नहीं पड़ती।

4. सौर पथ-दीप : वाह! सौर पथ-दीप से होती है बिजली की बचत। जहाँ विद्युत लाइन नहीं लगा सकते, ऐसे प्रदेशों में यह अधिक उपयोगी है।

इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में सिंचाई में जल निकालने के लिए सौर पंप का उपयोग किया जाता है। यातायात के क्षेत्र में सौर ऊर्जा के कारण ईंधन की बचत हो रही है। औद्योगिक क्षेत्र में भी यह अधिक-से-अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है। सौर ऊर्जा द्वारा पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है। यह बिजली से ज्यादा सुरक्षित है। निस्संशय सौर-ऊर्जा अत्यन्त उपयोगी है।



शब्दार्थ:

ऊर्जा-संचलन की क्षमता देनेवाली शक्ति, हाल ही में - वर्तमान में, at present ; हिस्सा-अंश, भाग; ताप-गरमी, उष्णता, heat ; स्रोत - किसी वस्तु या तत्व का उत्पत्ति स्थान, तकनीक-प्रविधि, किसी विशेष कला का ज्ञान; नवीकरणीय - अवधि समाप्त होने पर पुनः उपयोग में लाया जानेवाला, Renewable; ईंधन - वाहनों आदि में उपयुक्त डीज़ल, पेट्रोल आदि पदार्थ, Fuel; सिंचाई - किसी जलस्रोत से खेत में जल पहुँचाना, हल्का - कम वजनवाला, भार में कम ; यातायात - आवागमन, Transportation ; औद्योगिक - उद्योग संबंधी, Industrial.

विशेष सूचना :

- * कोची (Cochin) हवाई अड्डे में सौ प्रतिशत सौर ऊर्जा का उपयोग किया जा रहा है।
- * सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन के दो तकनीक]
 1. फोटोवोल्टाइक - Photovoltaic
 2. कॉन्सेंट्रेटिंग - Concentrating

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सूर्य पृथ्वी से लगभग कितने कि.मी की दूरी पर है?
2. सौर ऊर्जा का अर्थ क्या है?
3. सौर ऊर्जा से बिजली पैदा करने के मुख्यतः कितनी तकनीकें हैं?
4. घरों में सौर ऊर्जा का उपयोग कैसे किया जा सकता है?
5. सोलार कुकर को हिंदी में क्या कहते हैं?
6. सौर पथ-दीप से किसकी बचत होती है?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. सूर्य कितना शक्तिशाली है? उससे बिजली बनाने का काम कबसे शुरू हुआ है?
2. सूर्य से हमें क्या-क्या मिलता है?
3. नवीकरणीय योग्य ऊर्जा का उत्पादन मुख्यतः किन तत्वों से हो सकता है?
4. तीन ऊर्जाओं के नाम लिखिए।
5. सौर ऊर्जा से बिजली पैदा करने के लिए उपलब्ध तकनीकें कौन-सी हैं?
6. सौर लालटेन के बारे में लिखिए।

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. सूर्य पृथ्वी से है बहुत दूर, किन्तु है बहुत _____।
2. सौर ऊर्जा उत्पादन की तकनीक में _____ से वृद्धि हुई है।
3. सौर ऊर्जा को सीधे _____ में बदला जा सकता है।
4. कृषि क्षेत्र में जल निकालने के लिए _____ का उपयोग किया जाता है।

IV. जोड़कर लिखिए :

1. यातायात के क्षेत्र में सौर चूल्हा पाचक।
2. औद्योगिक क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण नहीं होता।
3. सौर ऊर्जा से बिजली से ज्यादा सुरक्षित है।
4. सौर ऊर्जा अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है।
5. सोलार कुकर ईंधन की बचत होती है।

V. विलोम शब्द लिखिए:

- | | |
|-------------|----------------|
| 1. पूर्ण x | 6. हल्का x |
| 2. प्रकाश x | 7. अधिक x |
| 3. बढ़ना x | 8. लाभ x |
| 4. प्रमुख x | 9. उपयोगी x |
| 5. गरम x | 10. सुरक्षित x |

VI. कर्नाटक में जल ऊर्जा से बिजली उत्पन्न करने के कई क्षेत्र हैं।

उनका परिचय प्राप्त कीजिए:

- उदा :** 1. गेरुसोप्पे जलप्रपात - लिंगनमक्की बाँध - शिवमोग्गा जिला
2. गगनचुक्की-भरचुक्की जलप्रपात - महात्मागाँधी विद्युत उत्पादन-मंड्या जिला केंद्र

VII. कल, आज और कल (सौर ऊर्जा तक की सफर):

- कल :** मिट्टी तेल का उपयोग - लालटेन वगैरह से रोशनी
आज : जल ऊर्जा से बिजली - बल्ब, ट्यूबलाइट वगैरह से रोशनी
आज : वायु ऊर्जा से बिजली - प्रमुख रूप से कृषि क्षेत्रों में
आज }
और } **सौर ऊर्जा का उपयोग - हर किसी क्षेत्र में**
कल }

(कल-१९५०, आज-२०००, कल-२०५०)

अब आप इसी प्रकार कल और आज का अंतर स्पष्ट कीजिए:

	कल	आज
जैसे : 1.	पैदल यात्रा	विभिन्न सवारी
2.		
3.		
4.		
5.		

VIII. कुछ ऐसे प्रचलित अंग्रेजी शब्द हैं जो अपनी भाषा में घुल-मिल गये हैं। इनके लिए अपनी भाषा में शब्द हैं, फिर भी हम उनका प्रयोग सीधा-सीधा वैसे ही करते हैं।

उदा:	1. Solar	सोलार	सौर (अपनी भाषा में)
	2. Doctor	डॉक्टर	चिकित्सक, वैद्य
	3. Jail	जेल	बंदीखाना
	4. Police Station	पुलिस स्टेशन	आरक्षक ठाना
	5. Internet	इंटरनेट	अंतर्जाल

ऐसे शब्दों का प्रयोग आप भी करते होंगे। कोई 10 शब्दों की सूची बनाइए।

IX. कन्नड में अनुवाद कीजिए:

1. 'सौर ऊर्जा' का अर्थ है "सौर-शक्ति"।
2. सूर्य से हमें ताप भी मिलता है, प्रकाश भी।
3. सौर ऊर्जा से पानी भी गरमाया जा सकता है।
4. वाह! सौर पथ-दीप से होती है बिजली की बचत।
5. सौर ऊर्जा बिजली से ज्यादा सुरक्षित है।

X. वर्ग पहेली में बिजली से चलनेवाली कुछ चीजों के नाम हैं।

उन्हें चुनकर लिखिए:

उदा : बल्ब

अ	ब	ल्ब	मे	धु	प्र
रे	ता	ओ	ट्रो	ला	शी
डि	प	व	रे	ई	त
यो	क	न	ल	यं	क
सं	ग	ण	क	त्र	पं
दू	र	द	र्श	न	खा

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

8. _____

9. _____

XI. याद करके लिखिए कि किन-किन जगहों में सौर ऊर्जा का उपयोग हो रहा है।

XII. अनुरूपता :

1. रात : चाँद :: दिन : _____

2. चाँद : चाँदनी :: सूर्य : _____

3. अशक्त : उपसर्ग शब्द :: शक्तिहीन : _____

4. जलशक्ति : जलऊर्जा :: सूर्यशक्ति : _____

भाषा ज्ञान

विस्मयादिबोधक अव्यय = 'विस्मय+आदि+बोधक'

वाक्य में जो अव्यय विस्मय, हर्ष, घृणा, शोक, भय, क्रोध आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, वे 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहलाते हैं। लेकिन इन अव्ययों का संबंध वाक्य में किसी भी शब्द से नहीं होता।

जैसे : हाय! अब वह नहीं रहा।

वाह! इशा कितनी सुंदर लड़की है।

वाक्य में निम्नलिखित प्रकार के विस्मयादिबोधकों का प्रयोग किया जाता है -

1. **विस्मय/आश्चर्य बोधक** - अरे!, ओहो!, ओह!, बाप रे ! आदि
2. **शोकसूचक** - आह!, ओह!, ऊह!, हाय!, हे भगवान! आदि
3. **हर्षबोधक** - आह!, वाह!, धन्य-धन्य!, क्या खूब!, बहुत अच्छा! आदि
4. **प्रोत्साहन सूचक** - शाबाश!, साधु-साधु!, धन्य! आदि
5. **भयसूचक** - बचाओ!, बाप रे!, अरे रे! आदि
6. **क्रोधसूचक** - अबे!, धत्!, चुप! आदि
7. **घृणासूचक** - धिक्!, धिक्कार!, हट!, छिः छिः! आदि
8. **अनुमोदक** - ठीक!, हाँ-हाँ!, जी हाँ!, अच्छा! आदि
9. **संबोधनसूचक** - रे!, अरी!, हे! आदि
10. **चेतावनी** - होशियार!, खबरदार! आदि

I. इस पाठ में प्रयुक्त विस्मयादिबोधक शब्दों को पहचानिए।

उनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य लिखिए।

II. विस्मयादिबोधक का चिह्न है ‘!’ । यह विराम चिह्नों में से एक है। निम्नलिखित चिह्नों को पहचानकर रिक्त स्थान भरिए:

(पूर्ण विराम, अर्धविराम, अल्पविराम, विवरण चिह्न, प्रश्न सूचक, योजक, उद्धरण चिह्न, कोष्ठक)

उदा: 1. “ ” _____

2. | _____

3. , _____

4. : _____

5. ? _____

6. () _____

7. ; _____

8. - _____

अध्यापन संकेत :

जल ऊर्जा से बिजली उत्पादन करनेवाले केंद्रों में जाकर उसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करें।



15. वीरांगना चेन्नम्मा



संकलित -

आशय :

छात्र कर्नाटक की वीर महिला चेन्नम्मा की देशभक्ति का परिचय प्राप्त करते हैं। अंग्रेजों की अनेक कोशिशों के बाद भी किन्नूर को चेन्नम्मा ने बचाया। लेकिन चेन्नम्मा के बंदी बन जाने के कारण किन्नूर अंग्रेजों के वश में गया। चेन्नम्मा जैसी वीर महिला के कारण कर्नाटक गर्व का अनुभव करता है।



18 वीं शताब्दी में सत्तालोलुप अंग्रेजों को नाकों चने चबानेवाली सर्वप्रथम भारतीय वीरांगना चेन्नम्मा थी। चेन्नम्मा का जन्म काकतीय वंश में सन् 1778 में हुआ था। उनके पिता का नाम धूलप्पा देसाई और माता का नाम पद्मावती था। एक तो इकलौती, फिर रूपवती और स्वस्थ। चेन्नम्मा शब्द का अर्थ ही है

सुन्दर महिला । उनकी शिक्षा-दीक्षा राजकुल के अनुरूप ही हुई। घुड़सवारी, शस्त्रास्त्रों का अभ्यास, आखेट आदि युद्ध कलाएँ उन्हें अपने वीर पिता से प्राप्त हुई। अपने जंगमगुरु के मार्गदर्शन में उन्होंने उर्दू, मराठी और संस्कृत भाषाओं का अध्ययन किया।

कित्तूर कर्नाटक राज्य के उत्तरी बेलगावी जिले में है। उन दिनों कित्तूर कर्नाटक राज्य के व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र भी था। देश-विदेश के व्यापारी वहाँ के बाज़ारों में हीरे-जवाहरातें खरीदने के लिए आया करते थे। ऐसे समृद्ध राज्य के प्रजावत्सल राजा मल्लसर्ज थे। चेन्नम्मा के माता-पिता ने बड़े हौसले से उनका विवाह राजा मल्लसर्ज के साथ कर दिया।

रानी चेन्नम्मा कित्तूर के राजमहल में सुख से रहने लगी। उनकी कोख से एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ, जिसका नाम था शिवबसवराज। लेकिन बचपन में ही उसकी मृत्यु हुई। राजा मल्लसर्ज की पहली पत्नी थी रुद्रम्मा। पूना के पटवर्दन ने मल्लसर्ज को चालाकी से बन्दी बना लिया। वहीं उनकी मृत्यु हो गई। मल्लसर्ज की मृत्यु के बाद चेन्नम्मा ने रुद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज को गद्दी पर बिठाया। शिवलिंग रुद्रसर्ज ने चेन्नम्मा की सलाह को हवा में उड़ाकर चाटुकारों से गहरी मित्रता कर ली, जिससे कित्तूर का पतन शुरू हुआ।

राजा शिवलिंग रुद्रसर्ज की मृत्यु 11 सितंबर 1824 को हुई। इसे अंग्रेज़ों ने कित्तूर राज्य को हड़पने का बड़ा अच्छा अवसर समझा। राजा निःसन्तान मरा था। उसने अपने एक संबन्धी गुरुलिंग मल्लसर्ज को गोद लिया था। लेकिन अंग्रेज़ गोद लिए पुत्र को उत्तराधिकारी नहीं मानते थे। उस समय डालहौसी गवर्नर-जनरल थे। ऐसे अवसर पर रानी चेन्नम्मा ने कित्तूर राज्य को सँभालकर रक्षा करने की कसम खाई।

कित्तूर राज्य में अंग्रेज़ी सैनिकों के प्रवेश से रानी चेन्नम्मा का रक्त खौल उठा, लेकिन उस समय वे कुछ नहीं कर सकीं। अंग्रेज़ों से लोहा लेने के लिए उन्होंने भीतर ही भीतर तैयारी आरंभ कर दी। अंग्रेज़ी प्रतिनिधी थैकरे ने रानी चेन्नम्मा को भाँति-भाँति के सन्देश भेजे। मगर रानी अपनी स्वाधीनता का सौदा करने पर राज़ी न हुई। इसी समय थैकरे को कित्तूर राज्य के येल्लप्पशेट्टी और वेंकटराव नामक देशद्रोही मिल गये। वे कित्तूर का नमक खाकर कित्तूर की जड़ खोदने में लगे हुए थे। थैकरे ने उन्हें कित्तूर का आधा-आधा राज्य सौंप देने की लालच दिखायी। बदले में वे कित्तूर के सभी भेद खोलने और भरसक सहायता करने को तैयार हो गये। दोनों ने कित्तूर का शासनभार सँभालने का परवाना लेकर चेन्नम्मा को दिया। उसे पढ़ते ही चेन्नम्मा ने थैकरे का पत्र टुकड़े-टुकड़े करते हुए कहा “हमने गोद लेकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध कोई षड्यंत्र नहीं रचा है। गोद लेना हमारा अधिकार है, इसे थैकरे नहीं रोक सकता। हमारे घरेलू मामलों में बोलनेवाला वह है ही कौन? कित्तूर स्वतंत्र राज्य है और तब तक रहेगा जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं।” यह फटकार सुनते ही दोनों देशद्रोही अपना-सा मुँह लेकर चले गये। कित्तूर में गुरुसिद्धप्पा जैसे कुशल दीवान और बालण्णा, रायण्णा, गजवीर और चेन्नबसप्पा जैसे वीर योद्धा भी थे, जिनके रहते कित्तूर के लिए कोई खतरा न था।

कित्तूर की जनता अंग्रेज़ों की चाल से भली-भाँति परिचित थी। थैकरे स्वयं बड़ी सेना लेकर कित्तूर आ पहुँचा। किंतु रानी उससे नहीं डरीं। थैकरे ने 500 सिपाहियों के साथ कित्तूर के किले पर चढ़ाई करने की आज्ञा दे दी। रानी ने वीर सैनिकों को युद्ध के लिए ललकारते हुए कहा - “मातृभूमि के सपूतो! अपने प्राणों की बाजी लगाकर हम अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हैं। अंग्रेज़ इसे हमसे बलपूर्वक छीनना चाहते हैं, लेकिन इसे हम कैसे छोड़ सकते हैं? यह हमें अपने पूर्वजों से मिली है।”

उधर थैकरे ने घमकी दी कि, “बीस मिनट में आत्मसमर्पण कर दिया जाय, नहीं तो किला तहस-नहस कर दिया जाएगा।” कुछ समय बाद मर्दानी वेश में रानी चेन्नम्मा शेरनी की भाँति अंग्रेजों की सेना पर टूट पड़ी। उनके पीछे दो हजार योद्धा थे। भयानक युद्ध हुआ। अंग्रेजों की सेना इस प्रवाह को सह न सकी। वह भाग खड़ी हुई और थैकरे मारा गया। देशद्रोहियों का काम तमाम कर दिया गया। बंदी गोरे अंग्रेज अफसरों के साथ उदारता का व्यवहार किया गया और उन्हें छोड़ दिया गया। लेकिन यह विजय बहुत दिनों तक न रही।

कुछ ही समय के बाद अंग्रेजों ने कित्तूर राज्य पर फिर आक्रमण किया। अब अंग्रेजी सेना अधिक थी। लेकिन कित्तूर के वीर सैनिकों के सम्मुख उसे दुबारा हार माननी पड़ी। फिर एक बार अंग्रेजों ने सारी शक्ति लगाकर घेरा डाला। इस युद्ध में रणचण्डी चेन्नम्मा बंदी बना ली गई। अंग्रेजों ने कित्तूर को लूटा। वहाँ कुछ भी न बचा। चेन्नम्मा को बैलहोंगला के दुर्ग में कारागार में डाल दिया गया। बंदीगृह में ही 2 फरवरी 1829 को चेन्नम्मा की जीवन ज्योति सदा के लिए बुझ गई।

यह कर्नाटक जनता के लिए गर्व की बात है कि कर्नाटक की वीरांगना चेन्नम्मा ने पहली बार स्वतंत्रता की जो चिनगारी डाली थी, बाद में वह सारे भारत में फैल गई।

शब्दार्थ :

सत्ता-अधिकार, लोलुप-लोभी, लालची; इकलौती-एकमात्र, आखेट-शिकार, जवाहरात-रत्न, मणि आदि; हौसला-उत्साह, साहस; कोख-गर्भ, पटवर्दन-एक राजा का नाम, गद्दी-सिंहासन, चाटुकार - झूठी प्रशंसा करनेवाले, पतन-विनाश, हड़पना-छीन लेना, अनुचित रूप से ले लेना; अवसर-मौका, गोद लेना - दत्तक रूप में स्वीकारना, सौदा करना-लेन-देन का व्यापार, जड़ खोदना-हानि पहुँचाना, सौंपना-वश में देना, भेद-रहस्य, भरसक-लगातार, निरंतर; परवाना-आज्ञा पत्र, फटकार-डाँट, खतरा-अपाय, विपत्ती; चाल-आचरण, चलन; ललकारना-युद्ध के लिए आह्वान, सपूत-सुपुत्र, धमकी देना - भय दिखाना, तहस-नहस करना-चूर चूर करना, मर्दानी वेश - पुरुष वेश, योद्धा-सैनिक, घेरा-आक्रमण, सम्मुख-सामने, दुबारा-दूसरी बार, चिनगारी - आग का कण/टुकड़ा।

मुहावरे:

1. नाकों चने चबाना - बहुत ही हैरान करना
2. रक्त खौलना - अत्यधिक क्रोधित होना
3. लोहा लेना - बदला लेना
4. अपना-सा मुँह लेकर चले जाना - अपमानित हो जाना
5. प्राणों की बाजी लगाना - जान पर खेलना
6. टूट पड़ना - आक्रमण करना
7. काम तमाम करना - खत्म करना, मार डालना
8. जीवन ज्योति बुझ जाना - देहांत होना, मर जाना

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. चेन्नम्मा का जन्म किस वंश में हुआ था?
2. चेन्नम्मा शब्द का अर्थ क्या है?
3. कित्तूर कहाँ है?
4. चेन्नम्मा का विवाह किसके साथ हुआ?
5. शिवलिंग रुद्रसर्ज ने किसको गोद लिया था?
6. चेन्नम्मा को अंग्रेज़ों ने कहाँ बंदी बनाया था?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. चेन्नम्मा के माता और पिता का नाम लिखिए।
2. चेन्नम्मा को उनके पिता से कौन-सी कलाएँ प्राप्त हुई थीं?
3. कित्तूर राज्य की समृद्धि के बारे में लिखिए।
4. कित्तूर का पतन शुरू होने का कारण क्या था?
5. येल्लप्पशेट्टी और वेंकटराव कित्तूर के भेद खोलने क्यों तैयार हो गये?
6. कर्नाटक की जनता के लिए गर्व की बात क्या है?

III. इन शब्दों का विलोम शब्द पाठ में से ढूँढकर लिखिए:

1. अस्वस्थ x _____
2. कुरूप x _____

3. देश x _____
4. शत्रुता x _____
5. बाहर x _____
6. देशभक्त x _____
7. कायर x _____
8. पराजय x _____

IV. अन्य लिंग शब्द लिखिए:

1. पिता - _____
2. रानी - _____
3. पुत्री - _____
4. बाप - _____
5. दादा - _____
6. शेरनी - _____

V. जोड़ी मिलाइए:

- | | |
|-----------------------------------|---------------|
| 1. चेतनम्मा का जन्म | 1. सन् 1829 |
| 2. चेतनम्मा की खोक से जन्मा पुत्र | 2. गवरनर-जनरल |
| 3. शिवलिंग रुद्रसर्ज की मृत्यु | 3. सन् 1778 |
| 4. डालहौसी | 4. सन् 1824 |
| 5. चेतनम्मा की जीवन ज्योति बुझी | 5. शिवबसवराज |

VI. अनेक शब्द के लिए एक शब्द लिखिए:

जैसे : एक से ज़्यादा भाषा जाननेवाला - बहुभाषी

1. सामान खरीदना एवं बेचना - _____
2. झूठी प्रशंसा करनेवाले - _____
3. जिनका कोई संतान न हो - _____
4. देश के प्रति द्रोह करनेवाला - _____
5. जो परिचित न हो - _____
6. स्वयं को समर्पित करना - _____

VII. पुराने समय में युद्ध करने के लिए तलवार, भाले, तीर-कमान आदि शस्त्रास्त्रों का उपयोग होता था।

अब आप तीन वाक्यों में लिखिए कि अगर आजकल युद्ध होता है तो किस प्रकार की चीज़ों का उपयोग किया जाता है?

VIII. कित्तूर रानी चेन्नम्मा के जो भी संवाद इस पाठ में आये हैं, उनका अभिनय कक्षा में करके दिखाइए।

IX. कन्नड में अनुवाद कीजिए :

1. कित्तूर कर्नाटक राज्य के उत्तरी बेलगावी जिले में है।
2. अंग्रेज़ गोद लिये पुत्र को उत्तराधिकारी नहीं मानते थे।
3. चेन्नम्मा ने भीतर ही भीतर तैयारी आरंभ कर दी।
4. कित्तूर स्वतंत्र राज्य है।
5. चेन्नम्मा के पीछे दो हज़ार योद्धा थे।
6. अंग्रेज़ों को दुबारा हार माननी पड़ी।

X. वीरांगना चेन्नम्मा जैसी अनेक महिलाओं का जन्म भारत देश में हुआ था। 'ओनके (मूसल) ओबब्बा' कर्नाटक की ही थी। उनकी कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाइए और दोनों महिलाओं की तुलना कीजिए।

XI. इस पाठ में आये हुए सभी पात्रों की सूची बनाइए और उनके बारे में एक-एक वाक्य लिखिए:

जैसे : 1. चेन्नम्मा - कर्नाटक की एक वीरांगना थी।

2. धूलप्पा देसाई - _____

3.

4.

5.

6.

XII. भारत देश को अंग्रेजों से बचाने के लिए जिन देशभक्तों ने दिन-रात परिश्रम किया, उनका चित्र इकट्ठा कीजिए और उनके बारे में दो-तीन वाक्य लिखिए।

XIII. अनुरूपता:

1. चेन्नम्मा के पिता : धूलप्पा देसाई :: चेन्नम्मा की माता : _____
2. चेन्नम्मा के पति : मल्लसर्ज :: चेन्नम्मा का पुत्र : _____
3. गुरुसिद्धप्पा : कुशल दीवान :: चेन्नबसप्पा : _____
4. 1778 : चेन्नम्मा का जन्म :: 1829 _____

अध्यापन संकेत :

- * कक्षा में देशभक्तों के संबंध में आशुभाषण स्पर्धा का आयोजन करें।
- * देश-विदेश की वीर महिलाओं की साहस गाथा कक्षा में सुनाएँ।

16. पूर्वाक्षर का पूर्वाग्रह



पी.एस. रामानुजम्-

आशय :

इस व्यंग्य रचना में लेखक ने अंग्रेजी भाषा-मोह के प्रभाव का तीक्ष्ण व्यंग्य किया है। हमारे पठन-लेखन से लेकर गाँव-शहरों के नाम, राजा-महाराजाओं के नाम और यहाँ तक कि भगवानों के नामों का भी संक्षिप्तीकरण करने से होनेवाली असमंजसता के बारे में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। छात्रों को इस रचना द्वारा सुझाव दिया गया है कि वे अपने नाम और जन्मस्थानों की पहचान बनाए रखने के लिए पूर्वाक्षर का पूर्वाग्रह छोड़ दें।

आजकल शहरों के नाम पूर्वाक्षरों में याने अंग्रेजी के इनिशियलों में सिमट रहे हैं। यह बड़े खेद की बात है। इन इनिशियलों के मारे हमारे कर्नाटक के शहरों के नाम अपना कन्नड़पन, अपनी पहचान, अपना अस्तित्व खो रहे हैं।

एक ज़माना था जब केवल आदमियों के नाम के पहले इनिशियल लगता था। आज हम ये पूर्वाक्षर शहरों के नामों को भी बाँट रहे हैं। समझ में नहीं आता इसके पीछे दीर्घ का लघु बनाने की मानव-सहज प्रवृत्ति है या यह कोई नया फैशन है। अथवा यह भी हो सकता है कि लोकोपयोगी विभाग वालों ने गाँवों के नाम लिखने के लिए छोटे फलक बनाए हों, फिर उनके आकारानुसार नामों को भी काट छाँटकर छोटा बनाया गया हो।

इस संकोच-प्रक्रिया की बलि बने हुए कुछ गाँवों के नामों का परिशीलन करना ठीक रहेगा। सुंदर 'तिरुमकूडलु नरसीपुर' अब 'टी नरसीपुर' बन गया है। आगे आने वाले संशोधकों को पथभ्रष्ट करने का काम है यह। आगे चलकर कभी दैववशात्, हमारे देश से अंग्रेजी भाषा के हट जाने का सौभाग्य अगर प्राप्त हुआ, तो इन इनिशियलों का अर्थ ढूँढ़ना मुश्किल हो जाएगा। अनेक खोजें की

K.R.S. 80 km
B.R.Hills. 70 km
M.M.Hills. 10km
D.N.Pura. 40km

S.K.D.R. Circle

H.K.Huchchaiah

Dr. M. Raj
M.B.S.S. M.D

A. K.Swami.
U.K.G

जाएँगी और विचित्र परिणाम प्राप्त होंगे। संशोधक शायद इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि 'टी नरसीपुर' नाम प्रायशः नरसीपुर में टी (चाय) के बागान होने के कारण आया होगा।

वह तो फिर भी अच्छा ही है। समझ लीजिए कि 'करीदोडुन पाल्य' नामक एक गाँव है। यह 'के.डी. पाल्या' बन जाएगा। क्रमशः वह 'केडी पाल्य' में रूपांतरित हो जाएगा और गाँव को बदनाम कर देगा। आगे चलकर एक दिन संशोधक निर्णय लेंगे कि इस गाँव में 'केडीयों' (गुंडे) के होने से यह नाम आया होगा। और इस तरह उस गाँव की निष्कलंक कीर्ति में दाग लग जाएगा। अंग्रेज़ी के पूर्वाक्षरों से होनेवाली हानि देखी न आपने?

अब 'होले नरसीपुर' की कहानी सुनिए। मनोहर, मंजुल निनाद करती हेमावती नदी और नरसिंह का वह भव्य मंदिर, वह होले नरसीपुर आज एच.एन. पुरा बन गया है। क्रमशः इसका हेच्चिपुर (फालतू नगर) अथवा 'एच्चमपुर' में कन्नड़ीकरण हो जाएगा, इसके इर्द-गिर्द दंतकथाएँ फैल जाएँगी। कुछ भी कहिए नदी, नरसिंह, सब अंग्रेज़ी के आद्याक्षरों में डूबकर, उनकी सुंदरता लोकोपयोगी विभाग के पत्थरों में पत्थर बन गई है। यह होले नरसीपुरवालों का, हेमावती नदी का और नरसिंह का भी बदनसीब ही है।

'चिक्कनायकन हल्ली' को ही लीजिए, आज वह 'सी.एन. हल्ली', बन गया है। आगे चलकर वह 'सीयनहल्ली' भी हो सकता है। वैसे ही 'चन्नरायपट्टण' 'सी.आर. पट्टण' बन गया है। 'हेग्गडदेवनकोटे' 'एच.डी. कोटे' बना है। इन प्रदेशों पर जिन-जिन नायकों ने, राजाओं ने, देवताओं ने राज किया था, उन सबको पूर्वाक्षरों में छिपा देना बड़ा ही दर्दनाक विषय है।

'कालमुद्दन दोड्डी' आज 'के. एम. दोड्डी' कहलाता है। पता नहीं कब श्रवणबेलगोल 'एस.बी. गोला' बन जाएगा, विजयपुर 'वि.पुर' बन जाएगा। दो-तीन शब्दों से बने नामों में पूर्वाक्षरों के प्रयोग से ह्रस्वीकरण हो जाता है। लगता है, आजकल लंबे-लंबे नाम पुकारने के लिए लोगों के पास समय

नहीं है। एक ज़माना था जब 'तिरुमले श्रीनिवासवरद रंगनाथ देशिक ताताचार' आदि नाम रखे जाते थे। सुबह नाम पुकारना प्रारंभ करो तो समाप्त होते-होते शाम हो जाती थी। आज समयाभाव के कारण हम मोहन, संदीप जैसे छोटे-छोटे नाम रख रहे हैं। लेकिन शहरों-गाँवों के नामों को तो उनके हाल पर ही छोड़ सकते थे...

शायद अंग्रेज़ों ने भी अपने गाँवों के नामों को इस तरह विकृत नहीं किया होगा। इस एक विषय में हम उनसे भी आगे बढ़ गए हैं और सब नामों को हमने छोटे-छोटे फॉर्मूलों की तरह बना डाला है। इस नाममय संसार में 'झूठो है यह जग' वाले सिद्धांतानुसार हम उनके आद्य नामों को 'अदृश्य' बना रहे हैं।

मुझे लगता है, व्यवहार में आसानी लाने के लिए आगे चलकर हमारे सारे व्यवहारों में इसी तरह की ह्रस्व अभिव्यक्ति का स्टाइल चल पड़ेगा। उदाहरण के लिए अगर कोई कहे कि "मैंने एक संकल्प किया है, उसके लिए टी.डी. जाकर वि.सी. के दर्शन कर आऊँगा तो हमें आश्चर्य में नहीं पड़ना चाहिए।" इसका अर्थ यह होगा कि तिरुपति देवालय जाकर वेंकटाचलपति के दर्शन कर आऊँगा। उसी तरह अगर कोई कहे कि "एम कोटे जाकर सी.आर. स्वामी से मिलकर आऊँगा" तो हमें उलझन में नहीं पड़ना चाहिए, इसका मतलब यह है कि मेलुकोटे जाकर चलुवराय स्वामी से मिलकर आऊँगा। वैसे ही अगर कोई आस्तिक महाशय कहे कि "वि.जी. स्वामी का अभिषेक कराना है" तो समझना चाहिए कि वेणु गोपाल स्वामी का अभिषेक किया जा रहा है।

हमारा 'बिलिगिरिरंगनबेट्ट' तो बी.आर.हिल्स बनकर पूरा अंग्रेज़ी हो गया है। उसमें वास्तव्य करने वाला 'रंगनाथ स्वामी' भी आर.एन. स्वामी बन गया है। आप डी.आर. दुर्ग जानते हैं? वही अपना देवरायन दुर्ग। वहाँ दो स्वामीजी रहते हैं, एक हैं वाई.एन. स्वामी और दूसरे बी.एन. स्वामी याने योगानरसिंह स्वामी और भोगानरसिंह स्वामी। नरसीपुर में जी.एन. स्वामी रहते हैं याने गुंजा नरसिंह स्वामी।

अत्यंत मनोहर, सुंदर वृंदावन गार्डन्स वाला कृष्णराज सागर आज नीरस के.आर. सागर हो गया है। इसका लघुकरण वहीं पर नहीं रुका है, वह के.आर.एस. बनकर अंग्रेज़ी वर्णमाला के तीन अक्षरों में सिमटकर अपनी पहचान ही खो बैठा है। यह भी हमारा दुर्दैव है कि श्रीरंगपट्टण एस.आर. पट्टण बनकर रंगनाथ स्वामी आज आर.एन. स्वामी बन गया है।

व्यक्तियों के नामों का इन इनिशियलों में छुपना तो ठीक है, पर गाँवों के नामों के लिए इसकी ज़रूरत नहीं है, यह तो सरासर अन्याय है। व्यक्तियों के नामों के लिए इस प्रकार ह्रस्वीकरण आवश्यक है, नहीं तो कोई किसी को पुकार नहीं सकेगा। अपने नाम के पीछे कुल का नाम, गाँव का नाम, बाप का नाम आदि सब कुछ लगा लेने वाले का इस देश में नाम लेकर पुकारना एक महासाहस बन जाता है। ये बड़े-बड़े नाम याद रखकर पुकारते-पुकारते शाम हो जाती है।

पूरी तरह से व्यक्तिगत होने पर भी इस संदर्भ में एक घटना के बारे में कहने को जी चाहता है। मैं आर.पी.एस. उत्तीर्ण होकर आगे की पढ़ाई के लिए माऊंट आबू की शिक्षा-अकादमी में गया था। पहले दिन हम सबको एक कतार में खड़ा कर एक अफसर हम सबके नाम लिखने लगे। हम कवायद मैदान में ही खड़े होकर नाम बताने लगे। सबको अपना-अपना पूरा नाम बताना था याने पूर्वाक्षरों का विस्तार कर बताना था। इस तरह नामों को बताना प्रारंभ हुआ। पहले ने अपना नाम महेंद्रनारायण सिंह बताया, दूसरे ने देवव्रत बंघोपाध्याय। ऐसे ही चल रहा था। मेरी बारी आई। मैंने एक ही साँस में अबाधगति से अपने पी. एस. इन पूर्वाक्षरों का विस्तार कर 'प्रतिवादी भयंकर संपतकुमाराचार्य रामानुजम्' बताया। उस अफसर ने क्षण-भर के लिए मुझे गर्दन उठाकर देखा और तीक्ष्ण स्वरों में दृढ़तापूर्वक कहा, "मेरे ऑफिस में आकर इसे लिखा जाना" और बिना कुछ लिखे वे अगले शिक्षार्थी का नाम लिखने लगे। नाम अगर इतना लंबा हो तो बेचारे और क्या कर सकते हैं?

खैरियत इस बात की है कि अब तक हमने इस पूर्वाक्षरों की पद्धति का प्रयोग पाठ्य-पुस्तकों पर नहीं किया-विशेषतः इतिहास की पाठ्य-पुस्तक पर। अगर ऐसा कुछ हो जाए तो राणा प्रातापसिंह आर.पी. सिंह बन जाएगा, औरंगजेब ए. जेब बनेगा और समुद्रगुप्त एस. गुप्त हो जाएगा। चंद्रगुप्त सी.गुप्त और अमात्य राक्षस ए. राक्षस बनेगा, पुलिकेशी पी. केशी और मयूर वर्मा एम. वर्मा बनेगा।

इस तरह से नामों के अर्धभाग इनिशियलों में छिपते ही जा रहे हैं। कभी-कभी तो पूरा का पूरा नाम ही अंग्रेज़ी वर्णों में सिकुड़ जाता है। पाठशाला-कॉलेजों में यह आम बात है। सभी अध्यापक विद्यार्थियों की जिह्वा पर अंग्रेज़ी के वर्ण बनकर सुशोभित होते हैं।

अंग्रेज़ी वर्णों का प्रभाव हमारे नामों पर हुआ है, इसमें कोई शक नहीं है, यह एक नया वर्ण व्यामोह है। इसका हमें त्याग करना चाहिए। कन्नड़ के वर्णों का प्रयोग ही हमारे लिए क्षेमकारक है। कन्नड़ के उन सुंदर नामों का संपूर्ण रूप में प्रयोग करना और भी अच्छा है। हमारा उच्चारण भी शुद्ध होगा और नाम भी बच जाएंगे।



लेखक परिचय

पी.एस. रामानुजम् का जन्म 6 अक्टूबर 1941 को चामराजनगर के बेडमूडलु गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतिवादी भयंकर संपतकुमार आचार्य था। माता का नाम इंदिरम्मा था। प्रारंभिक शिक्षा चामराजनगर के हरदनहल्ली में शुरू हुई। मैसूरु के महाराजा कॉलेज में बी.ए. में पाँच स्वर्ण पदक लेकर उत्तीर्ण हुए। संस्कृत में इन्होंने पीएच.डी. और डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की।

बचपन से ही कविता, कहानी लिखने की रुचि इनमें थी। आई. पी.एस. में छटा रैंक प्राप्त करके कर्नाटक के पुत्तूरु, कोडगु, कोलार आदि स्थानों में ए.एस.पी., एस.पी., डी.जी.पी के पदों पर काम करके निवृत्त हुए। 'बिल्ली की भाषा' और अन्य लेखों के संकलन से इनको कीर्ति मिली। 30 से अधिक रचनाएँ इन्होंने की हैं। साहित्य सेवा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा पुलिस विभाग में योग्य सेवा के लिए इनको राष्ट्रपति पदक भी प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत व्यंग्य रचना 'बिल्ली की भाषा' से चुना गया है। इसका अनुवाद प्रो. नंदिनी गुंडुराव जी ने किया है।

शब्दार्थ :

खेद-दुःख, व्यथा; के मारे-के कारण, शहर-नगर, पहचान-परिचय, फैशन-शोभाचार, बनावट; बाँट-वितरण, ढूँढना-खोजना, मुश्किल -कष्ट, मुसीबत ; इर्द-गिर्द - आस-पास, पत्थर-शिला, हाल-स्थिति, संसार-दुनिया, विश्व ; उलझन-बाधा, अटकाव ; कतार-पंक्ति, खैरियत-कुशल -क्षेम, भलाई ; अभिवादन-नमस्कार, प्रणाम; शक-संदेह, शंका।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. शहरों के नाम किसमें सिमट रहे हैं?
2. किन गाँवों के नामों का परिशीलन करना ठीक रहेगा?
3. हेमावती नदी कहाँ बहती है?
4. लोगों के पास किसके लिए समय नहीं है?
5. किस कारण से आज हम नाम छोटे-छोटे रख रहे हैं?
6. हमें क्या त्याग करना चाहिए?
7. इस पाठ के लेखक का पूरा नाम क्या है?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. टी. नरसीपुर के संक्षिप्तीकरण के बारे में लेखक के क्या विचार हैं?
2. 'करिदोड़न पाल्य' के बारे में लेखक क्या कहते हैं?
3. इनिशियलों में सिमटे कितने गाँवों के नाम लेखक ने लिया है? वे कौन-कौन से हैं?
4. के.अर.एस नाम अपनी पहचान क्यों खो बैठी है?

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. आगे आनेवाले संशोधकों को _____ करने का काम है।
2. सबको पूर्वाक्षरों में छिपा देना बड़ा ही _____ विषय है।
3. सुबह नाम _____ करना प्रारंभ करो तो समाप्त होते-होते _____ हो जाती थी।
4. कभी-कभी तो पूरा का पूरा नाम ही _____ में सिकुड़ जाता है।
5. सभी _____ विद्यार्थियों की जिह्वा पर अंग्रेज़ी के वर्ण बनकर सुशोभित होते हैं।

IV. जोड़ी मिलाइए:

- | | |
|-----------------|-------------------|
| 1. होले नरसीपुर | 1. तिरुपति देवालय |
| 2. बी.आर. हिल्स | 2. कृष्णराज सागर |
| 3. टी.डी | 3. मयूर वर्मा |
| 4. के.अर.एस | 4. रंगनाथ स्वामी |
| 5. एम. वर्मा | 5. नरसिंह मंदिर |

V. विलोम शब्द लिखिए:

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1. अपना X _____ | 6. अच्छा X _____ |
| 2. सहज X _____ | 7. कीर्ति X _____ |
| 3. नया X _____ | 8. हानि X _____ |
| 4. सुंदर X _____ | 9. पास X _____ |
| 5. मुश्किल X _____ | 10. सुबह X _____ |

VI. निम्नलिखित विलोम शब्दों को सही शब्दों के साथ जोड़कर लिखिए:

- | | | |
|-------------|---|------------|
| 1. आस्तिक | X | अनुत्तीर्ण |
| 2. पता | X | बेशक |
| 3. दिन | X | नास्तिक |
| 4. शक | X | रात |
| 5. उत्तीर्ण | X | लापता |

VII. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | | |
|--------------|---|-------|
| 1. बात | - | _____ |
| 2. प्रवृत्ति | - | _____ |
| 3. गुंडा | - | _____ |
| 4. नदी | - | _____ |
| 5. दंतकथा | - | _____ |
| 6. घटना | - | _____ |
| 7. पुस्तक | - | _____ |
| 8. देवता | - | _____ |

VIII. अन्य लिंग रूप लिखिए:

1. आदमी - _____
2. नायक - _____
3. राजा - _____
4. देवता - _____
5. स्वामी - _____
6. बाप - _____
7. अध्यापक - _____

IX. कन्नड में अनुवाद कीजिए :

1. चिक्कनायकन हल्ली सी.एन. हल्ली बन गया है।
2. आज समयाभाव के कारण छोटे-छोटे नाम रख रहे हैं।
3. रंगनाथ स्वामी भी आर.एन.स्वामी बन गया है।
4. अंग्रेज़ी वर्णों का प्रभाव हमारे नामों पर हुआ है।

X. अनुरूपता :

1. करीदोडुन पाल्या : के.डी.पाल्या :: होले नरसीपुरा : _____
2. पूर्वाक्षर : उपसर्ग शब्द :: कन्नड़पन : _____
3. ए.जेब : औरंगजेब :: एस.गुप्त : _____
4. बी. आर. हिल्स : बिलिगिरि रंगनबेट्टा :: डी.आर. दुर्ग : _____

‘कि’ और ‘की’ का प्रयोग

‘कि’	‘की’
समुच्चयबोधक अव्यय के रूप में। मुख्य वाक्य को आश्रित वाक्य/ उपवाक्य से जोड़ने के लिए इस अव्यय का प्रयोग होता है। उदा: समझ लीजिए कि करीदोड़न पाल्य नामक एक गाँव है।	1. संबंधबोधक कारक प्रत्यय के रूप में। उदा: (i) दशरथ की तीन रानियाँ थीं। (ii) बगीचे की हवा शुद्ध होती है। 2. ‘करना’ क्रिया के भूतकाल का स्त्रीलिंग रूप है। उदा: (i) सिपाही ने देश की रक्षा की। (ii) उषा ने परीक्षा में नकल नहीं की। 3. अन्य कुछ संबंधसूचक अव्ययों के पूर्व ‘की’ का प्रयोग होता है। उदा: की ओर, की तरफ, की भाँति, की बगल, की अपेक्षा आदि।

I. ‘की’ की सहायता से वाक्य पूर्ण कीजिए :

- मेरी बेटी ने आई.ए.एस _____ परीक्षा ली है।
- छात्रों _____ कोई गलती नहीं थी।
- कर्नाटक _____ राजधानी बेंगलूरु है।
- रमेश ने चोरी नहीं _____ थी।
- शिल्पा ने गलती नहीं _____ ।

II. ‘कि’ समुच्चयबोधक अव्यय के प्रयोगवाले पाँच वाक्य पाठ में से चुनकर लिखिए और अर्थ समझिए ।

अध्यापन संकेत :

पाठ में दिये गये गाँव-नगरों के नामों के अलावा अन्य अनेक जगहों के नामों का संक्षिप्तीकरण हुआ है। छात्रों से उनकी एक सूची बनवाएँ।



17. रहीम के दोहे



आशय : छात्र इन दोहों के द्वारा सज्जनों तथा महान् लोगों का स्वभाव समझ सकते हैं। इसी प्रकार छोटे तथा साधारण वस्तुओं के महत्व की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

1. तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम परकाजहित, संपत्ति संचहि सुजान॥
2. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करी सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥
3. 'रहिमन' देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि॥
4. बड़े बड़ाई न करै, बड़े न बोलें बोल।
'रहिमन' हीरा कब कहै, लाख टका मम मोल॥



कवि परिचय : रहीम का जन्म 17 दिसंबर 1556 को लाहौर में हुआ था। उनका पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना है। उनके पिता का नाम बैरमखान, माता का नाम सुल्ताना बेगम था। रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, श्रृंगार सोरठा आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम, श्रृंगार का सुंदर समावेश हुआ है।

शब्दार्थ :

तरुवर-वृक्ष, पेड़; सरवर-सरोवर, पान-पानी, पर-दूसरे लोग, काज-काम, कार्य; हित-भलाई, अच्छाई ; संपत्ति - धन, संचहि - संग्रह, सुजान-सज्जन , प्रकृति - स्वभाव, (व्यक्तित्व) कुसंग - बुरी संगत, चंदन-एक सुगंधित वृक्ष, लिपटना - सटे रहना, भुजंग - साँप, सर्प ; लघु - छोटा, डारि - डाल छोड़ना, सुई - ಸೂಜಿ, needle; तलवार - खड़ग, ಖಡ್ಗ; बड़ाई-प्रशंसा, हीरा-ಹಿರಾ, टका - मुद्रा, सिक्का; मम-मेरा, मोल-दाम।

भावार्थ :

1. रहीम कहते हैं कि जैसे पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते और सरोवर अपना पानी खुद नहीं पीते, वैसे ही सज्जन दूसरों के कल्याण के लिए संपत्ति का संग्रह करते हैं।
2. रहीम कहते हैं कि जो व्यक्ति अच्छे स्वभाव का होता है, बुरी संगत उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, जैसे चंदन के पेड़ से साँप लिपटे रहने पर भी चंदन में उसका विष व्याप्त नहीं होता।
3. रहीम कहते हैं कि रईस और बड़े लोगों को देखकर छोटे और साधारण लोगों को छोड़ मत दीजिए (तिरस्कार मत कीजिए); क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार क्या कर सकती है?
4. बड़े लोग न ज़्यादा बोलते हैं, न ही अपनी प्रशंसा करते हैं। रहीम कहते हैं कि हीरा कब कहता है कि उसका मूल्य लाख मुद्राएँ हैं।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सुजान लोग संपत्ति क्यों संग्रह करते हैं?
2. चंदन के पेड़ से कौन लिपटे रहता है?
3. रहीम किसका तिरस्कार न करने के लिए कहते हैं?
4. कौन अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

1. रहीम ने सज्जनों के बारे में क्या कहा है? सोदाहरण समझाइए।
2. रहीम ने भुजंग के उदाहरण से क्या बताया है?
3. छोटे लोगों के महत्व को रहीम ने कैसे व्यक्त किया है?
4. हीरे के बड़प्पन को रहीम ने कैसे बताया है?

III. जोड़कर लिखिए:

- | | |
|-----------------|-------------------|
| 1. तरुवर | लाख टका मम मोल |
| 2. चंदन पेड़ | लघु न दीजिये डारि |
| 3. देख बड़ेन को | लिपटे रहत भुजंग |
| 4. हीरा | फल नहीं खात है |

IV. अनुरूप शब्द लिखिए:

1. तरु : पेड़ :: तलवार : _____
2. दूध : क्षीर :: भुजंग : _____
3. मोल : दाम :: बोल : _____
4. काज : कार्य :: संपत्ति : _____

V. इन शब्दों के अलग-अलग अर्थ लिखिए:

1. वर - _____, _____
2. सर - _____, _____
3. पर - _____, _____
4. जान - _____, _____

VI. तुकांत शब्द लिखिए:

1. पान _____
2. कुसंग _____
3. डारि _____
4. बोल _____

VII. इन शब्दों का उच्चारण लगभग समान प्रतीत होता है, किंतु अर्थ भिन्न हैं इनके अर्थ नीचे दिए गए शब्दों में से चुनकर लिखिए:

(कंजूस, दिवस, यश, पवित्र, हवा, आशा, कटार, रचना, तिरस्कार, दरिद्र)

1. पवन - _____
पावन - _____

2. दिन - _____
 दीन - _____
3. अपेक्षा - _____
 उपेक्षा - _____
4. कृपण - _____
 कृपाण - _____
5. कीर्ति - _____
 कृति - _____

VIII. चारों दोहों को कंठस्थ कीजिए।

IX. ऊपर से नीचे रिक्त स्थानों को भरकर दी गई शब्द पहेली का हल कीजिए:

(सहायता के लिए संकेत चित्र दिए गए हैं)

इ		बै	श	
	ज		र	र
र		गा		
त	र			न



X. शुद्ध रूप लिखिए:

1. रुवतर - _____
2. गजंभु - _____
3. वातरिल - _____
4. प्रतिकृ - _____
5. कातहिजरप - _____

परियोजना :

- * किन्हीं पाँच अत्यमूल्य धातुओं के बारे में पाँच-पाँच वाक्य लिखिए। उनके रंगीन चित्र बनाइए।

अध्यापन संकेत :

- * कबीरदास के किन्हीं चार दोहों को कक्षा में सुनाएँ।
- * कन्नड कवि सर्वज्ञ के वचनों को छात्रों से वाचन कराएँ।



परिशिष्ट - 1

अ. अनुरूपता

आ. पत्र-लेखन

इ. पूरक वाचन

ई. निबन्ध

अ. अनुरूपता

I. प्रथम दो शब्दों से सूचित संबंध के अनुरूप तीसरे शब्द से संबंधित शब्द लिखिए:

1. स्वामी विवेकानंद : जीवनी :: गुलाब सिंह : _____
2. स्वामी विवेकानंद : जगदीश चंद्र :: चेरापूँजी से आया हूँ : _____
3. मौसी : कहानी :: भीम और राक्षस : _____
4. मौसी : भीष्म साहनी :: भीम और राक्षस : _____
5. खेलो-कूदो-स्वस्थ रहो : निबंध :: नफे के चक्कर में : _____
6. जय जय भारत माता : मैथिलीशरण गुप्त :: चलना हमारा काम है : _____
7. पर्यावरण बचाओ : डॉ. परशुराम शुक्ला :: पूर्वाक्षर का पूर्वाग्रह : _____
8. भीम और राक्षस : एकांकी :: सड़क की रक्षा-सबकी सुरक्षा : _____
9. भीम : कुंती :: स्वामी विवेकानंद : _____
10. तरुवर फल : नहीं खात है :: सरवर : _____
12. यह मेरा : बेटा :: यह मेरी : _____
13. पाठ पढ़ाना : सबक सिखाना :: भाग्य फूटना : _____
14. शारीरिक खेल : शारीरिक श्रम :: मानसिक खेल : _____

15. मेघालय की राजधानी : शिलंग :: मणिपुर की राजधानी:

16. क्रिकेट : मैदानी खेल :: शतरंज : _____
17. दौड़ना : व्यक्तिगत खेल :: फुटबाल : _____
18. तुम्हारा नाम क्या है? : प्रश्नार्थक वाक्य ::
पानी ले आओ। : _____
19. साथी, हाथ बढ़ाना : साहीर लुधियानवी :: अनुशासन ही
शासन है : _____

आ. पत्र लेखन

i. पिता के नाम पत्र

सेवा में,
श्री महेश,
विद्यानगर,
बेलगावी - 3

स्थान : बेंगलूरु - 5
दिनांक : 17-11-2017

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है कि आप भी सकुशल होंगे। मेरी पढ़ाई अच्छी तरह चल रही है। इस साल हमारे विद्यालय में शैक्षणिक पर्यटन का आयोजन किया गया है। उसमें मैं भी भाग लेना चाहता हूँ। इसलिए आप मुझे इसकी अनुमति देते हुए ₹. 1000 भेजने की कृपा करें।

प्रेषक,
बसवराज,
नौवीं कक्षा,
सरकारी हाईस्कूल,
बेंगलूरु - 5

आपका प्रिय पुत्र,
बसवराज

ii. छुट्टी के लिए आवेदन पत्र

प्रेषक,

राजेंद्र कुमार,
नौवीं कक्षा,
स्वामी विवेकानंद विद्यालय,
धारवाड

स्थान : धारवाड

दिनांक : 7-12-17

सेवा में,

प्रधानाध्यापक,
स्वामी विवेकानंद विद्यालय,
धारवाड

महोदय,

विषय : छुट्टी के लिए विनती

उपर्युक्त विषयानुसार आपसे सविनय निवेदन है कि मैं अपने भाई की शादी में शामिल होने के लिए बेंगलूरु जा रहा हूँ। इसलिए मैं पाँच दिन तक स्कूल में उपस्थित रह नहीं पाऊँगा। मुझे 8-12-2017 से 12-12-2017 तक पाँच दिन की छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

XXXXXX

अभिभावक के हस्ताक्षर

भवदीय

राजेन्द्र कुमार

पूरक वाचन

2. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

कई साल पहले ओलंपिक खेलों के दौरान एक विशेष दौड़ होने जा रही थी। सौ मीटर की इस दौड़ में एक गज़ब की घटना हुई। नौ प्रतिभागी शुरुआत की रेखा पर तैयार खड़े थे। उन सभी को कोई-न-कोई शारीरिक विकलांगता थी।

सीटी बजी, सभी दौड़ पड़े। बहुत तेज़ तो नहीं पर उनमें जीतने की होड़ ज़रूर तेज़ थी। सभी जीतने की उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। तभी एक छोटा लड़का ठोकर खाकर लड़खड़ाया, गिरा और रो पड़ा। उसकी आवाज़ सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ देखने लगे कि क्या हुआ? फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की मदद के लिए उसके पास आने लगे। सब के सब लौट आए। उसे दोबारा खड़ा किया। उसके आँसू पोंछे, धूल साफ की। लड़के की दशा देख एक बच्ची ने उसे अपने गले से लगा लिया, और उसे प्यार से चूम लिया, यह कहते हुए कि, 'अब ठीक हो जाएगा'।

फिर तो सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ मिलकर दौड़ लगाई। सब के सब अंतिम रेखा तक एक साथ पहुँच गए। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, इस सवाल के साथ कि सब के सब एक साथ बाजी जीत चुके हैं, इनमें से किसी एक को स्वर्ण पदक कैसे दिया जा सकता है। निर्णायकों ने भी सबको स्वर्ण पदक देकर समस्या का शानदार हल ढूँढ़ निकाला। सब के सब एक साथ विजयी इसलिए हुए कि उस दिन दोस्ती का अनोखा दृश्य देख दर्शकों की तालियाँ थमने का नाम नहीं ले रही थीं।

प्रश्न :

1. छोटा लड़का क्यों रो पड़ा?
2. प्रतिभागियों ने लड़के की मदद कैसे की?
3. दर्शक कैसे देखते रहे?
4. निर्णायकों ने समस्या का हल कैसे ढूँढ़ निकाला?
5. सबके सब एक साथ विजयी क्यों हुए?

3. निम्नलिखित कविता पढ़कर प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

मैं नाम ले तुम्हारा – कब से बुला रहा हूँ
अपनी दया के दो कण – बरसाओ इस वतन में।

तुम हो कहाँ, यहाँ पर – क्या क्या न हो रहा है
आओ बहाओ गंगा – इस आग के विपिन में।

देखो ये भूखे-भूखे – जीवन में मर रहे हैं
दो अन्न किसानों को – बस जाओ इनके मन में।

यह विनय पत्रिका है – टूटे हुए दिलों की,
मंजूर कर दो, भर दो – पीयूष विश्व जन में।

कुछ ऐसी शक्ति दे दो – बन मल्लिका, चमेली
काँटों को चूम लूँ मैं – भर दूँ सुगंध उनमें।

मुझको दो स्नेह इतना पावन कि उमड़ कर मैं
भर दूँ प्रकाश बुझते – दीपों के तन में मन में।

सारा जगत सुखी हो – माताएँ मुस्कुरायें
सूरज व चाँद चमकें – प्रत्येक के वदन में

शुभ हो निशा व संध्या – शुभ हो दिवस सुखद हो
भगवान विनती सुन लो – सब हो पुरोगमन में।

प्रश्न :

- 1) प्रस्तुत कविता में कवि किससे विनती कर रहे हैं?
- 2) कवि कहाँ गंगा बहाना चाहते हैं?
- 3) आग बुझाने के लिए ईश्वर से कवि क्या माँगते हैं?
- 4) कवि बुझते दीपों के तन-मन में क्या भरना चाहते हैं?
- 5) इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

निबंध

2. पुस्तकों का महत्व

विचार-बिंदु : * लाभ * प्रभाव * पुस्तकें किसी देश की अमर निधि होती हैं * पुस्तकें अस्त्र हैं * मनुष्य का मित्र

लाभ - पुस्तकों का महत्त्व तथा मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं, जबकि पुस्तकें हृदय को उज्ज्वल करती हैं। अच्छी पुस्तकें मनुष्य को पशु से देवता बनाती हैं, उसकी सात्विक वृत्तियों को जागृत कर उसे पथभ्रष्ट होने से बचाती हैं। श्रेष्ठ पुस्तकें मनुष्य, समाज तथा राष्ट्र का मार्गदर्शन करती हैं। पुस्तकों का हमारे मन-मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़ता है।

प्रभाव - संसार के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर देखते हैं कि जितनी भी महान विभूतियाँ हुई हैं, उन पर किसी-न-किसी अंश में अच्छी पुस्तकों का प्रभाव था। महात्मा गांधी भगवद्गीता, टालस्टाय तथा अमेरिका के संत थोरो के साहित्य से अत्यधिक प्रभावित थे। लेनिन में क्रांति की भावना मार्क्स के साहित्य को पढ़कर जगी थी।

पुस्तकें किसी देश की अमर निधि होती हैं - किसी जाति के उत्कर्ष अथवा अपकर्ष का पता उसके साहित्य से चलता है। प्राचीन ग्रीक संस्कृति कितनी उच्च और महान थी, इसका पता हमें उसके साहित्य से चलता है। गुप्तकाल भारत का स्वर्णिम युग कहा जाता है क्योंकि उस काल में सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों की रचना हुई। कालिदास इस युग के महान साहित्यकार थे।

पुस्तकें अस्त्र हैं - विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। पुस्तकों में लिखे विचार संपूर्ण समाज की काया पलट देते हैं। समाज में जब भी कोई परिवर्तन आता है अथवा क्रांति उपस्थित होती है, उसके मूल में कोई विचारधारा ही होती है।

मनुष्य का मित्र - एक विद्वान की उक्ति है - “सच्चे मित्रों के चुनाव के पश्चात् सर्वप्रथम एवं प्रधान आवश्यकता है- उत्कृष्ट पुस्तकों का चुनाव।” जो पुस्तकें हमें अधिक विचारने को बाध्य करती हैं, वे ही हमारी सबसे बड़ी सहायक हैं। वे मनुष्य को सच्चा सुख और शांति प्रदान करती हैं। थामस ए. केंपिस ने एक बार कहा था - “मैंने प्रत्येक स्थान पर विश्राम खोजा, किंतु वह एकांत कोने में बैठकर पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त कहीं प्राप्त न हो सका।” पुस्तक-प्रेमी सबसे अधिक सुखी होता है।

[illegible]